राज
कॉमिक्स
विशेषांक
मूल्य 40.00 संख्या 315
परकाले

मेरी मदद करो, ध्रुव! इस नागराज को रोको! यह नकली और पापी नागराज है! अगर इसका रास्ता नहीं रोका गया तो पूरी दुनिया में भगवान के बजाय शैतान की पूजा होने लगेगी। और इसको सिर्फ तुम ही रोक सकते हो!
इस पर ध्यान मत दो ध्रुव! छोड़ दो मेरा रास्ता! मेरे दुश्मन तुमको भ्रमित करके हमको आपस में लड़वाना चाहते हैं, और मुझको वे तीन मुंड हासिल करने से रोकना चाहते हैं जो इस दुनिया में फैले शैतान के हर दूत को कैद कर सकते हैं!
ओफ! कुछ समझ में नहीं आ रहा है कि कौन सही कह रहा है, और कौन गलत!...
...लेकिन अभी तो मुझे इस नागराज और उसके मित्रों को अपने मित्रों की मदद से रोकना ही होगा, क्योंकि वे बनते जा रहे हैं विनाश के...
परकाले
संजय गुप्ता की पेशकश
कथा: जॉली सिन्हा
चित्र: अनुपम सिन्हा.
इंकिंग: विनोद कुमार.
सुलेख एवं रंग संयोजन: सुनील पाण्डेय.
सम्पादक: मनीष गुप्ता.

महानगर जैसे विशाल मैट्रो शहर में अपराध दर, नागराज के कारण चाहे एकदम निम्न स्तर पर हो, लेकिन शून्य कभी नहीं हो सकती-
क्याऊं!
चाहे मामूली ही सही लेकिन अपराध तो होते ही रहेंगे-
अरे अपने कर्मों से चाहे मत डर पर नागराज से तो डर! अगर नागराज आ गया तो तू सालों तक जेल में सड़ेगा!
फटाफट माल निकाल!
ओए, नागराज दुनिया को बचाने में बिजी रहता है! उसके पास टाइम किधर है जो तेरे जैसे एक आदमी को लुटने से बचाने आएगा! ला, (पुच) दे दे माल!
लुटेरा यह नहीं जानता था कि नागराज के लिए हर चीज महत्त्वपूर्ण है! दुनिया भी-
और-
तड़ाक
एक मामूली असहाय इंसान भी-
देखा, मैंने कहा था न कि नागराज आएगा!
तूने कब कहा था रे?
तुम बिलकुल सही वक्त पर आए नागराज! वरना इसने तो मुझे लूट ही लिया था!

ओ... ओ...

सांप में पैर फंसकर गिरते ही 'लुटे नागरिक' के ब्रीफकेस का सारा सामान जमीन पर बिखर गया-

ओह! दर्जनों घड़ियां! चाकू, पिस्तौल और पैसे! इन पैसों पर धनिये की पत्ती भी चिपकी है! यानी ये सच बोल रहा था! तुमने लूटा है सब्जी वाले को!

यानी मैं गलत समझ रहा था! लुटने वाला ही लुटेरा निकला! सबसे पहले तो इस गलती की भरपाई करनी होगी! ऐसे!
मुझे माफ कर दो! तुमसे बचकर लूट-मार करने का बस यही एक तरीका था!
हमारा गैंग ऐसे ही गरीबों को लूटता है, जिनके पास एक दो हजार रुपए भी हों, और वे शकल से अपराधी लग रहे हों!
सूट-बूट पहने होने के कारण पुलिस हमेशा हमारी बात ही सही मानती थी।
सही कह रहा है तू! हम इंसान की परख उसकी शक्ल से करते हैं और यहीं पर धोखा खा जाते हैं! मुझे माफ करना दोस्त! अब लॉकअप में ये जाएगा, और शिनाख्त करने तुम आओगे!
माफी मांगने की जरूरत नहीं है, नागराज!
ऐसी परिस्थिति में तो कोई भी धोखा खा सकता है!
वह तो अच्छा हुआ कि सधम अपने इरादों में कामयाब नहीं हुआ और मानवता एक बहुत बड़े खतरे से बच गई! अगर सधम को 'पाप क्षेत्र' में न भेज दिया गया होता तो पूरी धरती पाप क्षेत्र बन जाती!
खैर, अब तो सधम की कहानी खत्म हो चुकी है! अब धरती को उससे कोई डर नहीं है!
धन्यवाद दोस्त! आज तुमने मुझको एक बहुत बड़ी गलती करने से बचा लिया! अभी थोड़े दिन पहले मैं अधम और सधम को पहचानने में गलती कर चुका हूं! जो अच्छा दिखता था वह बुरा निकला और बुरी शक्ल वाला अच्छा निकला! ☸
☸ इस संबंध में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें मल्टी स्टार विशेषांक विध्वंस

इस संबंध में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें मल्टी स्टार विशेषांक विध्वंस

कोई फायदा नहीं होगा, सधम! द्वार खुलने से भी कुछ ही पापी आत्माएं धरती पर आ पाएंगी! पृथ्वी पर पाप फैलाने के लिए पूरे पाप क्षेत्र का धरती पर फैलना जरूरी है! और ऐसा सिर्फ त्रिमुंडों को आपस में जोड़कर किया जा सकता है!
जो धरती पर अलग-अलग स्थानों पर पड़े हुए हैं!
तो फिर मैं धरती पर पहुंचकर उन त्रिमुंडों को हासिल करूंगा, और पाप क्षेत्र को हमेशा के लिए खत्म कर दूंगा! आजाद कर दूंगा तुम सबको!
यहां से बाहर निकलने के बाद तुम खुद भी आजाद नहीं रह पाओगे सधम! नागराज जैसी पुण्यात्माएं तुमको जल्दी ही पकड़ लेंगी!
मैं एक तीर से दो शिकार करूंगा! पाप क्षेत्र के अवरोध में द्वार भी खोलूंगा और ऐसा रूप भी धारण करूंगा कि पुण्यात्माएं त्रिमुंड हासिल करने में खुद ही मेरी मदद करेंगी!
बस, अब मुझको एकांत चाहिए! ताकि मैं किसी ऐसी भीषण पापी आत्मा को ढूंढ सकूं, जो पुण्यात्माओं को ऐसी टक्कर दे सके जिससे द्वार खुल सके!
और ऐसी शक्ति को पाने के लिए मैं पूरी पृथ्वी को छान मारूंगा!

मिल गया! मिल गया ऐसा एक महापापी प्राणी जिसके अंदर उतना ही पाप है जितना मेरे अंदर! लेकिन वह कैद में है! उसको आजाद कराना होगा! और यह काम करेंगे मेरे वो गुलाम जिनको मैंने सदियों तक पृथ्वी पर रहने के दौरान तैयार किया था!

अब शुरू होता है पृथ्वी पर पाप क्षेत्र को फैलाने का खेल!

मानवों और मानवता से आबाद यह धरती – जिसका तीन-चौथाई भाग जल से ढका हुआ है-

और इस जल के अंदर सागर के सबसे गहरे तल में स्थित है प्राचीन विज्ञान का एक चमत्कार-

स्वर्ण नगरी- देव जाति के प्राणियों का नगर जो सदियों से यहां पर स्थित है! सिर्फ गिने-चुने मानवों को ही इसकी जानकारी है-❀

इसलिए किसी अंजान का यहां पर आना केवल एक संयोग ही हो सकता है-

ओह! नगरी की सीमा पर बेड़ियों से जकड़ी एक युवती तैर रही है! और हमारे यंत्र बता रहे हैं कि वह अभी भी जीवित है!

अवश्य किसी निर्दयी ने इसकी हत्या करने के लिए इसको इस प्रकार से फेंका है! संयोगवश यह यहीं पर आ गिरी!

इसको नगरी के अंदर ले आओ!

आदेश मिलते ही स्वर्ण नगरी के प्रहरी युवती के पास जा पहुंचे-

❀ इस संबंध में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें ग्रैण्ड मास्टर रोबो, सामरी की ज्वाला, चण्डकाल की वापसी और महाकाल

® सुश्रूषा गृहः चिकित्सालय या हास्पिटल

राक्षस चंडकाल को स्वर्ण नगरी की कैद से मुक्त करवाना है मुझे!
चंडकाल कड़ी सुरक्षा के घेरे में था-
इस पर दिन रात नजर रखनी जरूरी क्यों है? हमने तो वैसे भी इसको उस दुनिया में पहुंचाया हुआ है जहां पर इसका दिमाग इसको देवों पर विजय प्राप्त करते हुए दिखा रहा है!
इसको तो यह आभास भी नहीं है कि वास्तव में ये कैद में है! सिर्फ इतना ही नहीं हमने इसकी याददाश्त को भी इससे अलग कर दिया है! अब इसका दिमाग भी हमारी कैद में है, और शरीर भी! यह तब तक आजाद नहीं हो सकता जब तक कोई बाहर से इसको आजाद कराने न आए! अपने आप तो ये आजाद हो ही नहीं सकता है!
इसीलिए तो मुझे बाहर से आना पड़ा है! चंडकाल को आजाद कराने के लिए!

और यह काम पूरा करले से जो बेड़ीकड़ी को रोकेगा, वह मृत्यु को प्राप्त होगा!
धड़ाम

प्रहरी इस अजीब मुसीबत से निपट तो नहीं पाए थे-

लेकिन बेहोश होते-होते भी एक प्रहरी खतरे का संकेत बजाने में सफल हो गया था-

बेड़ीकड़ी चंडकाल के शरीर को कक्ष से बाहर लाने में तो सफल हो गया था-

लेकिन स्वर्णनगरी से बाहर जाने का रास्ता अभी बहुत लंबा था-

वहीं पर रुक जाओ! और हमारे कैदी को छोड़ दो! वर्ना तुम्हारे लौह शरीर को पिघला दिया जाएगा!

तुम सब मेरा रास्ता छोड़ दो, वर्ना तुम्हारे प्राण तुम्हारे शरीर को छोड़ देंगे!

कि विनाश किसका होगा-
दोनों गोलों के आपस में टकराते ही जो तीव्र ध्वनि तरंगें पैदा हुईं, उनकी शक्ति प्रहरियों को हवा में उछालकर दूर फेंकने के लिए काफी थीं-
आऽऽऽह! मेरे कान!
मेरा तो सिर दर्द से फटने लगा है!
सबसे आगे होने के कारण इस ध्वनि धमाके ने तो मेरा कवच ही तोड़ डाला है!
आऽऽऽह!

हम लोग इसको मामूली मुसीबत समझ रहे हैं। इसलिए मात खा रहे हैं। इस बार अस्त्रों- शस्त्रों से लैस सैनिकों को भेजो।
हमको पहले ही समझ लेना चाहिए था कि चंडकाल को मुक्त कराने के लिए कोई मामूली शक्ति युक्त प्राणी को नहीं भेजेगा।
अद्भुत वैज्ञानिक शक्तियों से युक्त अस्त्रों से लैस स्वर्ण योद्धाओं ने जल्दी ही बेड़ीकड़ी को आ घेरा-
ओ! ये तो और विध्वंसक अस्त्र लेकर आ गए! और अब ये वायुक्षेत्र से वार कर रहे हैं!
मुझे चंडकाल को बचाने के साथ-साथ इनको नष्ट करना होगा! चंडकाल को किसी भी सूरत में नुकसान नहीं पहुंचना चाहिए!
अगले ही पल- बेड़ीकड़ी के गोले में एक खाना खुल गया। और-
उस विध्वंसकारी किरण ने मिसाइल का सा काम कर दिखाया! हवा में उड़ता एक स्वर्ण योद्धा लड़ाई से बाहर हो गया-

लेकिन बाकी दोनों स्वर्ण योद्धा अपनी गति को बढ़ाकर किरण वार से बच रहे थे-
इसका 'सिर' उड़ गया है! और इसके शरीर को बनाने वाली चेनें भी टूट रही हैं! लेकिन फिर भी ये रुक नहीं रहा है। अब इसको रोकने के लिए क्या करें?
मैं नहीं रुकूंगा...
रुकोगे तुम दोनों!
बस, बहुत हो गया! अब मैं खुद उसको जाकर रोकूंगा!
जाओ, धनंजय! उस मुसीबत को सिर्फ तुम ही रोक सकते हो!

Amaan
स्वर्ण नगरी वासी अब चिंतित हो उठे थे-
हम बेड़ीकड़ी के विषय में कुछ भी नहीं जानते! इसलिए हम उसको रोक पाने में असफल सिद्ध हो रहे हैं!
ये लड़की अब तक बेहोश है! वर्ना इससे कम से कम यह तो पता चल ही सकता था कि बेड़ीकड़ी आया कहां से है?
पर इसकी हालत ठीक नहीं है। इसके शरीर में बार-बार हो रही ऐंठन इसकी हालत और खराब होने का संकेत दे रही है!
बेड़ीकड़ी को रोकने का सारादारोमदार अब धनंजय के बाजुओं पर आ टिका था-
बस, तेरे कदम इस स्थान से आगे नहीं बढ़ेंगे!
कौन है रे तू? जब मुझको प्रलयंकारी अस्त्र नहीं रोक पाए तो ये महाभारत काल का धनुष मुझे भला क्या रोकेगा!
धनंजय के धनुष से जो तीर छूटते हैं उनके सामने प्रलयंकारी अस्त्र भी कंकड़ की भांति लगते हैं! तूने अभी मंत्रित तीरों की शक्ति को देखा नहीं है! ले देख, मैं तुझको दिखाता हूं तीरों की शक्ति!
तू पहली ही शक्ति को सहकर दिखा तो मैं तुझको योग्य शत्रु मान लूंगा!
आऽऽऽह! ये... ये तीर तो मेरे 'शरीर' में अंदर तक धंस गया है!
और भीषण कंपन पैदा कर रहा है!

म... मैं अपने शरीर को बनाने वाली चेनों को एक साथ नहीं रख पा रहा हूं! निकाल ये तीर मेरे शरीर में से, या इसकी शक्ति समाप्त कर दे! वर्ना... मेरा शरीर बिखर जाएगा!

यही तो मैं करना चाहता हूं! इसलिए तुझे बचाने का तो सवाल ही नहीं उठता है!

मैंने तुमसे मदद नहीं मांगी थी, धनंजय! तुमको चेतावनी दी थी! क्योंकि अगर मैं खत्म होऊंगा तो मेरे साथ-साथ स्वर्ण नगरी भी खत्म हो जाएगी!

धनंजय द्वारा शक्ति-तीर को वापस बुलाते ही बेड़ीकड़ी ने हमला शुरू कर दिया-

अब मैं तुमको दुबारा तीर चलाने का मौका ही नहीं दूंगा!

ओह! इसने मेरे हाथों से धनुष को गिरा दिया है!

हे भगवान! इसने अपनी चेनों से स्वर्ण नगरी के भवनों को जकड़ लिया है! और इसके शरीर से होते हुए कंपन भवनों तक पहुंचकर उनको कंपाकर गिरा रहे हैं! मुझे कंपनों को रोकना ही होगा!

लेकिन मेरे दिमाग में अब जो योजना बन रही है, उससे मैं बगैर मंत्रित तीरों के ही बेड़ी-कड़ी नाम की मुसीबत को गायब कर सकता हूं!

धनंजय के उस किरण वार ने बेड़ीकड़ी की चेनों को काटकर चंडकाल को भूमि पर गिरा दिया-

कहानी 19 पेज से जारी

Amaan
परकाले
और फिर- धनंजय की 'मस्तक मणि' हवा में एक द्वार बनाने लगी-
ओऽऽऽ! मैं समझ गया तेरी चाल! समझ गया! पर मैं तुझको इस चाल में सफल नहीं होने दूंगा!
ओफ! ये मुझको द्वार बनाने से रोक रहा है!...
... मैं इसको अंतरिक्ष के किसी गुमनाम कोने में भेजना चाहता था!
लेकिन इसके बाद मुझको इतना ध्यान लगाने ही नहीं दे रहे हैं कि मैं अपनी इच्छा के स्थान का द्वार खोल सकूं! खैर, अब ये द्वार कहां खुलेगा, ये तो ईश्वर ही जाने! लेकिन मैं द्वार को खोलूंगा अवश्य! ताकि इस मुसीबत को कम से कम स्वर्ण नगरी से तो बाहर निकाला जा सके!
द्वार बना-
और धनंजय ने लपककर अपने धनुष पर फिर से एक शक्ति बाण को चढ़ा लिया-
ये व्यवास्त्र है! वायु का बवंडर पैदा करने वाला तीर!
ये तुझको द्वार के उस पार फेंक देगा! और फिर तू यहां पर कभी वापस नहीं आ पाएगा!
नहीं!
मैं चंडकाल को छोड़कर नहीं जाऊंगा!
बेड़ीकड़ी की चेनें स्वर्ण नगरी की चीजों से लिपटकर उसको पार जाने से रोकने लगीं-
एक भयंकर रस्साकशी भी चालू हो गई थी-
शायद किस्मत ने ही बेड़ीकड़ी को द्वार के पार जाने से रोक लिया था-

क्योंकि धनंजय द्वारा जल्दबाजी में खोले गए द्वार के उस पार था- राजनगर-
अरे! ये... ये क्या है? आसमान से ओलों के बजाए चेनें कैसे बरसने लगीं?
जरूर नर्क का द्वार खुल गया है! भागो! ये अभी तो इमारतों को मामूली नुकसान पहुंचा रही हैं! फिर हमको नर्क में घसीटने लगेंगी!
राजनगर पर मुसीबत आए और उसका रखवाला न आए-
यह असंभव है-
यह तो सचमुच अजीबो-गरीब चीज लग रही है! लेकिन बगैर इसके पास गए असलियत का पता नहीं लगेगा! पास जाने में खतरा तो जरूर है, लेकिन अगर मैंने अभी खतरा नहीं मोल लिया तो राजनगर पर खतरा जरूर टूट पड़ेगा!
वर्ना ध्रुव को माजरा समझते देर नहीं लगती-
ओफ्! चेनें तो बुरी तरह से हिल रही हैं! इन पर पकड़ बनाए रखना ही मुश्किल है! इन पर चढ़कर ऊपर पहुंचना तो एवरेस्ट पर चढ़ने के बराबर है!
चेनों के झुंड ने द्वार के आकार को छुपा रखा था-

और द्वार के दूसरी तरफ-
ओफ्! व्यवास्त्र काम नहीं कर पा रहा है। क्योंकि इसका शरीर छिद्रों से भरा हुआ है। वायु अपना दबाव डालने के बजाय इसके आर-पार हो जा रही है। और यह अपनी चेनों को अलग-अलग स्थानों पर फंसाकर बवंडर के दबाव का सामना आराम से कर पा रहा है!
इस बल-परीक्षा में जीत आखिरकार-
बेड़ीकड़ी की ही हुई-
अब तू नहीं बचेगा, धनंजय!
धनंजय! यानी मैं चेनों के साथ स्वर्ण नगरी के अंदर खिंच आया हूं!
बेड़ीकड़ी ने ध्रुव को भी अंजाने में अपने साथ ही खींच लिया था-
अरे! ये तो ध्रुव है!
भाग्य ने इसको हमारे पास भेजा है! इसको तुरंत नियंत्रण कक्ष में ले आओ! और युवती को दिखाओ! शायद ये उस युवती को पहचान सके, और हमको बेड़ीकड़ी को रोकने का कोई रास्ता मिल सके!

Amaan
ध्रुव, इधर आओ!
य... यह सब क्या हो रहा है? धनंजय किससे लड़ रहा है? और ये मुसीबत आई कहां से?
यही तो हम तुमको बताना चाहते हैं! आओ!
और फिर- नियंत्रण कक्ष में-
...और फिर गोलों से बना ये प्राणी बेड़ीकड़ी खड़ा हो गया, और चंडकाल को ले जाने की कोशिश करने लगा!
हमारे दूसरे योद्धा जब इसको रोकने में असफल रहे तो धनंजय को खुद इससे भिड़ने जाना पड़ा!
और वह लड़की कहां है?
देखो! यह रही वह लड़की!
ध्रुव की आंखें लड़की को पहचानने में व्यस्त हो गईं-
और उधर धनंजय बेड़ीकड़ी को रोकने में व्यस्त था-
चंडकाल को अगर तू ले जाने में सफल हो भी गया बेड़ीकड़ी तो भी कोई लाभ नहीं होगा! क्योंकि इसके मस्तिष्क में इसकी याददाश्त नहीं है! इस वक्त ये बिना ईंधन का वाहन है!
इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता! मुझको चंडकाल को लाने का आदेश मिला है तो मैं चंडकाल को लेकर जाऊंगा!
चाहे वह किसी भी हालत में क्यों न हो!

RCJ

और उधर- स्क्रीनों पर नजर गड़ाए हुए ध्रुव चौंक उठा-

मैं समझ गया! बताओ कहां पर है ये लड़की?

सुषुप्त गृह में! यानी चिकित्सा कक्ष में!

मुझे तुरन्त वहां का रास्ता दिखाओ! जल्दी! समय कम है!

सुषुप्त गृह में-

सारी तरकीबें आजमा लीं! ये स्त्री होश में क्यों नहीं आ रही है?

इसको होश में लाने का तरीका मुझे पता है!

ध्रुव!

क्या है वह तरीका?

यह!

ओऽऽऽफ

ये... ये क्या? तुमने तो इसको गिरा दिया! पर क्यों?

वह इसलिए मूर्खों, क्योंकि ये वह बात समझ गया है जो तुम लोग अब तक नहीं समझ पाए थे! कमाल है लड़के! पर तूने मुझे पकड़ा कैसे?

तुम्हारे गले की हरकत से! मैं स्क्रीन पर तुमको और बेड़ीकड़ी को एक साथ देख रहा था। जब बेड़ीकड़ी ने बोला तो तुम्हारे गले में भी उन्हीं स्वरों के कंपन हुए! जाहिर था कि बेड़ीकड़ी तुम्हारी बोली बोल रहा था!

और अगर ऐसा था तो यह भी स्पष्ट था कि उसको तुम ही अपने इशारे पर चला रही थी! उसमें अपनी जान है ही नहीं! और इसीलिए उसको नष्ट करना मुश्किल साबित हो रहा है!

तो फिर डंकिनी का असली रूप भी देख लो!
ओफ! ये तो भाग रही है! ये जरूर बेड़ीकबी की मदद के लिए जाएगी!
नहीं! इसको अगर ऐसा करना होता तो यह बेहोश होने का नाटक न करती रहती!
इसका मकसद कुछ और ही है! इसका पीछा करना होगा!

डंकिनों से बेड़ीकड़ी के संपर्क की तीव्रता अब क्षीण हो रही थी-
इसलिए धनंजय को उस पर हावी होने का मौका मिल रहा था-
तेरी शक्ति कम हो रही है बेड़ीकड़ी! इसलिए तू मेरे मेघास्त्र से नहीं बच पाएगा!
जल, बेड़ीकड़ी पर बेअसर है। मुझमें जंग लगता ही नहीं है... आऊ!
ये... ये जल तो कुछ अजीब सा है!

लेकिन ये चंडकाल के राक्षसी शरीर पर असर नहीं करेगी! तू मरेगा और चंडकाल को हम फिर से बंदी बना लेंगे!
यदि ऐसा है तो मुझको युद्ध का रुख फिर पलटना होगा!
बेड़ीकड़ी की चेनें लंबी होकर-
एक संयंत्र में जा घुसीं और संयंत्र के टुकड़े हवा में उड़ने लगे-
अरे! ये संयंत्र तो हमारे नगर की वायु को स्वच्छ रखने का काम करता है! अब हवा में ऑक्सीजन की मात्रा कम होती जाएगी!
ये जल नहीं अम्ल है! एसिड!
इस समय तुझ पर अम्लीय वर्षा हो रही है जो तुझको जल्दी ही गला देगी!
और सभी स्वर्ण नगरी वासियों का दम घुटने लगेगा!
मेरी तरह!
हा हा हा! अब तुझको भला कौन रोकेगा!
क्योंकि तेरा शक्ति तीर भी तेरे साथ-साथ बेदम हो रहा है! अम्ल वर्षा थम रही है!

धनंजय का ख्याल एकदम सही था-

वायु-संयंत्र क्षतिग्रस्त होने का असर जल्दी ही सामने आने वाला था-

ये तो उस कक्ष की तरफ जा रही है, जिसमें चंडकाल कैद था!

मैं समझ गया! धनंजय ने बेड़ीकड़ी को बताया था कि चंडकाल की स्मृति को उससे अलग कर दिया गया है! ये बात बेड़ीकड़ी के जरिए इसको भी पता चल गई है!

ये उसी स्मृति को लेने जा रही है! लेकिन मैं इसको सफल नहीं होने दूंगा!

ओ! दम क्यों घुट रहा है?

क्योंकि मैंने बेहोशी के नाटक के दौरान मानस तरंगों के जरिए पूरी स्वर्ण नगरी का चप्पा-चप्पा छान मारा था! और अब मेरे आदेश पर बेड़ीकड़ी ने उस संयंत्र को नष्ट कर दिया है, जो इस 'शीश-गुंबद' की वायु को स्वच्छ रखता है! अब तुम या तो दम घुटने से मरोगे, या मेरे किरण वारों से! मुझे तुम किसी भी हालत में रोक नहीं सकते!

क्योंकि न तो मुझे सांस लेने की आवश्यकता है और न ही बेड़ीकड़ी को!

आज ध्रुव की फुर्ती का इम्तिहान था! तार के रास्ते होती हुई किरण ध्रुव के शरीर को खाक करने के लिए चल पड़ी थी-
लेकिन किरण के अपने शरीर तक पहुंचने देने से पहले ही ध्रुव ने स्टार लाइन के दूसरे सिरे को भी दाग दिया था-
और तार के रास्ते पर चल रही किरण भी शिकार को छोड़कर शिकारी की ही तरफ मुड़ गई थी-
आऽऽऽह!
तेरा खेल खत्म हुआ डंकिनी! अब तू चंडकाल की 'स्मृति' कभी हासिल नहीं कर पाएगी! आऊ!
इस भ्रम में मत रह मानव कि अगर मेरी किरण ने मुझे ही घायल कर डाला है तो मैं 'स्मृति' हासिल नहीं कर सकती!
मैं उसे हासिल करूंगी और अवश्य करूंगी! न तो सांस लेने को तड़पते स्वर्ण नगरी वासी मुझको रोक पाएंगे और न ही तुम!
आऽऽऽह! मदद की आवश्यकता है!
पर यहां पर न तो वायुचर है, न थलचर है, और न ही जलचर!
मदद मांगू तो किससे?

सारे स्वर्ण नगरी वासी बिना पानी की मछली की तरह छटपटा रहे हैं। बिना पानी की मछली !!

यस ! मिल गया रास्ता ! स्वर्ण नगरी वासियों को बचाने का भी और डंकिनी को हराने का भी !

चिकित्साधिकारी जी ! मुझे... अह... जल्दी से एक जानकारी चाहिए !

धनंजय, बेड़ीकड़ी को रोकने की नाकाम कोशिशें जारी रखे हुए था-

तू दम घुटने से नहीं बल्कि मेरे ही हाथों से मरना चाहता है ! ले तेरी इच्छा मैं पूरी कर देता हूं !

ठक

अरे ! ये... पानी कहां से आ रहा है ?

यही सवाल, 'चंडकाल-स्मृति' को हासिल कर चुकी डंकिनी की जुबान पर भी था-

ये पानी कहां से घुसा आ रहा है ? खैर, इससे मुझे क्या फर्क पड़ता है ! मेरा काम तो हो चुका है !

तुम्हारा काम शुरू नहीं हुआ, बल्कि तुम्हारा खेल खत्म हो चुका है डंकिनी !

तू फिर आ गया मानव ! और अब तेरे इशारे पर जलचर मुझ पर वार कर रहे हैं !

लेकिन मेरा दम अब क्यों नहीं घुट रहा है ?

सिर्फ मेरा ही नहीं, अब किसी भी स्वर्ण नगरी वासी का दम नहीं घुट रहा है। क्योंकि सभी स्वर्णनगरी वासी अपने गलों में लगे एक विशेष यंत्र द्वारा मछली की तरह सांस ले सकते हैं! और वैसा ही एक यंत्र मेरे गले में भी लगा है!
इस यंत्र की मदद से जल में भी बात की जा सकती है!
ओफ़! चारों तरफ से विशाल जलचर मुझ पर वार कर रहे हैं! इन सबको मार पाना असंभव है!
किसी भी तरह इस 'स्मृति बॉक्स' को चंडकाल के शरीर तक पहुंचाना होगा! तभी चंडकाल आज़ाद हो पाएगा! पर ये होगा कैसे?
मैं बेड़ीकुड़ी तक नहीं पहुंच सकती, और वह मुझ तक नहीं आ सकता! क्योंकि जलचरों ने उसको भी घेर रखा है!

बेड़ीकड़ी को जलचरों के अलावा जल वनस्पति ने भी घेर रखा था-
ओफ़! एक तो जल में वैसे ही हरकत करना मुश्किल होता है! और ऊपर से ये सिवार मेरे अंगों को और जाम किए जा रही है! अब यहां से बचकर निकल पाना असंभव है!
एक ही रास्ता है!
डंकिनी के दिमाग ने एक रास्ता ढूंढ लिया था-
बेड़ीकड़ी की चेनें एक बार फिर लंबी होने लगीं
और डंकिनी के हाथ में थमे 'स्मृति बॉक्स' तक आ पहुंचीं-
'स्मृति बॉक्स' से चेनों का स्पर्श होते ही, ऊर्जा तरंगों के रूप में जमा चंडकाल की स्मृति-
चेनों से होती हुई-
बेड़ीकड़ी की चेनों से लटके चंडकाल के शरीर तक आ पहुंची-
और चंडकाल जाग उठा-
ओफ़! ये क्या अनर्थ हो गया?

यह मैं कहां पर हूं ?हां, याद आया! मैं स्वर्ण नगरी में कैद हूं! ध्रुव और धनंजय की चाल का शिकार होकर मैं यहां कैद होने के लिए खुद ही आ मरा था! पर मैं आजाद कैसे हुआ? खैर, जैसे भी आजाद हुआ हूं। फिलहाल तो मुझे यहां देवों की नगरी में होने का फायदा उठाना है! नष्ट करनी है ये नगरी मुझे! ❀
अरे! ये... ये इसने क्या किया? यह आराम से बच सकती थी! लेकिन फिर भी इसने जानबूझकर 'सोर्ड-फिश' की सोर्ड को अपने सीने में घुसने दिया!
ओह! चंडकाल आजाद तो हो गया है! लेकिन वह लड़ने के लिए यहीं पर रुकना चाहता है। उसको तो यहां से भगाना है। वर्ना अगर वह फिर से पकड़ा गया तो हमारी सारी योजना चौपट हो जाएगी। एक ही रास्ता है। मुझे अपनी जान देनी होगी। तभी मेरा अभियान सफल होगा!
और अब इसके अन्दर से एक ऊर्जा निकल रही है!
❀ इस संबंध में विस्तृत रूप से जानने के लिए पढ़ें: हत्यारा कौन?

उस ऊर्जा का निशाना चंडकाल था-
आज चाहे पूरी स्वर्ण नगरी से एक साथ टक्कर लेनी पड़े! लेकिन चंडकाल स्वर्ण नगरी का नामो-निशान मिटाकर ही...
... आऽऽऽह!
ये ऊर्जा कहां से आई?
ऊर्जा चंडकाल को संदेश दे रही थी-
ओह! मुझे आजाद कराने के पीछे एक खास मकसद है! मुझे पहले उस मकसद को पूरा करना है! और फिर वह शक्ति देवों को नष्ट करने में मुझे सहयोग देगी! ठीक है! मैं ऐसा ही करूंगा!
ओह! चंडकाल के मुंह से काली फुहार निकल रही है! पानी गंदा होता जा रहा है!
कुछ भी नजर नहीं आ रहा है! कहां है चंडकाल?

ओफ्! हम इस पानी में सांस नहीं ले सकते! पानी को 'शीशा-गुंबद' से बाहर निकालना पड़ेगा!
अब कोई समस्या भी नहीं होगी! वायु संयंत्र की मरम्मत कर ली गई है!
पानी के साथ-साथ चंडकाल भी स्वर्ण नगरी से गायब हो चुका था-
चंडकाल यहां कहीं नहीं है। वह जा चुका है!
चंडकाल राक्षसों का पृथ्वी पर आखिरी वंशज है। उसका पहला और आखिरी मकसद है उसके जानी दुश्मन देवों का अन्त!
आखिर ऐसा क्या काम हो सकता है जो चंडकाल के लिए देवों को खत्म करने से भी ज्यादा जरूरी हो! वह तो हमारा मुकाबला करने के लिए एकदम तैयार था! फिर एकाएक भाग क्यों खड़ा हुआ?
वह भागा नहीं है। मेरे ख्याल से उसको भगाया गया है! उस शक्ति के द्वारा जिसने उसको आजाद कराने के लिए डुकिली और बेड़ीकड़ी जैसे प्राणियों को भेजा था!
और ऐसी शक्ति का जो भी काम चंडकाल करेगा वह कम से कम भला काम तो नहीं ही होगा!
तुम सही कह रहे हो ध्रुव! पूरे सागर में से मुझको चंडकाल के संकेत कहीं से भी नहीं मिल रहे हैं। वह जरूर धरती पर है! और चूंकि वह हमारी कैद से भागा है, इसलिए उसको बंदी बनाना भी हमारा ही फर्ज है!
इससे पहले कि चंडकाल कुछ तबाही मचाए, उसको वापस लाना होगा!
मैं तुम्हारे साथ पृथ्वी पर चलकर चंडकाल की तलाश करूंगा, ध्रुव!
ठीक है धनंजय! इस वक्त चंडकाल की तलाश से बढ़कर और कोई जरूरी काम नहीं है!

इस वक्त- मुसीबत कहीं और ही टूटने वाली थी-

ये हम कहां जा रहे हैं निशा? महानगर की सीमा तो खत्म हो रही है! आगे तो पहाड़ी इलाका शुरू हो जाता है!

तुमने तो कहा था कि हमको भारती कम्युनिकेशंस के लिए कुछ नए संचार उपकरण खरीदने हैं!

मैंने तो सच कहा था! बस यह नहीं बताया था कि उपकरण हमको राजनगर से खरीदने हैं! बस, पहाड़ी इलाके के बाद राजनगर का इलाका शुरू हो जाता है!

ओ! तुम मुझको पहले बता देतीं तो मैं कभी नहीं आता!

मैं जानती थी! इसीलिए तो मैंने तुमको बताया नहीं था!

वर्ना तुम मेरे साथ आते ही नहीं!

निशा! सामने देखो!

ओ माई गॉड! ये लुढ़कती हुई चट्टान सड़क पर कहां से आ गई?

चलो! बाल-बाल बचे!

ओ माई गॉड! ओ माई गॉड!
राज नीचे गिर गया! न जाने उसको कितनी चोट आई होगी! पर अब मैं क्या करूं? चट्टानों के आने की स्पीड और साइज दोनों ही बढ़ते जा रहे हैं! अब तो कार भगाने की भी जगह नहीं बची है! टक्कर होकर रहेगी! मैं... मैं आंखें बन्द कर लेती हूं!
लगता है मैं उड़ रही हूं! शायद मैं मर गई हूं! मेरी आत्मा परलोक जा रही है!
बाय दुनिया वालों! बाय!
'बाय' नहीं 'हाय' बोलो विशा! तुमको मैं परलोक नहीं, बल्कि सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने आया हूं!
नागराज! तु...तुम यहां कैसे आ गए?
राज ने गिरते-गिरते अपने मोबाइल से मुझसे संपर्क किया था, और सौभाग्यवश मैं पास में ही था!
यानी राज बच गया है! शुक्र है!

हां! राज तो बच गया है और वह अपनी चोटों का इलाज करवाने चला भी गया है! लेकिन मुझे इन चट्टानों के एकाएक शहर में आने का कारण ढूंढना होगा! यह न तो संयोग है और न ही कोई मामूली घटना! मुझे इस मुसीबत का पता लगाकर इसको रोकना होगा!

ज़रा संभलकर नागराज! और जो भी खबर मिले, सबसे पहले मुझ तक ही पहुंचाना!

ओ॰ के॰ निशा!

चट्टानें पहाड़ियों की तरफ से आ रही हैं! लेकिन पहाड़ियां तो यहां से काफी दूर हैं! वहां से आने वाली चट्टानों की गति तो इतनी तेज नहीं हो सकती!

नागराज को जल्दी ही अपने सवाल का जवाब मिल गया–

चट्टानें तो इसी तरफ से आ रही हैं! लेकिन इनको किस चीज से फेंका जा रहा है कि दूर जाने पर इनकी गति कम होने के बजाय और बढ़ती जा रही है!

इनको मैं भेज रहा हूं!

और इनकी मदद से ही दूसरों की जान निकालता है प्रस्तर!
ओह! तो ये तेरा काम है प्रस्तर! लेकिन तू है कौन, और चट्टानों को शहर की तरफ क्यों फेंक रहा था?

तेरे शहर में तबाही फैलाने के लिए! ताकि तबाही फैलने पर तू तबाही फैलाने वाले को ढूंढता हुआ यहां पर आए और प्रस्तर के हाथों खुद तबाह हो जाए!
मुझको या महानगर को तबाह करके तुमको क्या मिलेगा? क्यों तबाही फैलाना चाहते हो तुम?
प्रस्तर आदेश का पालन करता है! प्रस्तर अपने मालिक से कारण नहीं पूछता!
तू पहाड़ी पर बहुत ऊंचाई पर खड़ा है! यहां से तू गिर कर मरेगा!
तेरे पैर के नीचे का पत्थर तुझे अपने ऊपर टिकने नहीं देगा!
मुझे गिराना इतना आसान नहीं है प्रस्तर! मैं किसी भी सतह से चिपक सकता हूं!
लेकिन नागराज के स्पर्श करते ही-
हाथ के संपर्क वाले पत्थर भी लुढ़कने लगे-
तुझे किसी भी पत्थर पर टिकने की जगह नहीं मिलेगी नागराज! क्योंकि यहां मेरा राज है!
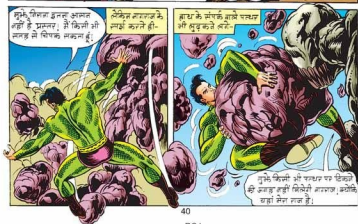
चट्टान नागराज को कुचलती हुई निकल गई-

पर घायल नागराज को संभलने का मौका तक नहीं मिला-

क्योंकि चट्टानों को नागराज का अपने ऊपर गिरे रहना भी गवारा नहीं था-

उफ! ऐसे तो मैं शर्तिया मारा जाऊंगा! अब गिरने से बचने का एक ही तरीका है!

नागरस्सी का प्रयोग!

नागरस्सी भी नागराज के शरीर के एक अंग के ही समान थी-

इसलिए चट्टानों ने उसे भी लिपटने देने से इंकार कर दिया-

ओफ! नागरस्सी का प्रयोग भी असफल रहा! अब गिरकर मरने से तो मुझे इच्छाधारी शक्ति भी नहीं बचा सकती! अगर सीधे गिरना होता तो जमीन से टकराने के ठीक पहले उस शक्ति का प्रयोग करके बच जाता! लेकिन यहां तो मुझको टकराते हुए ही नीचे गिरना है! बार-बार इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग करना संभव नहीं है!

एक तरीका है! वह ये कि मैं चट्टानों पर खड़ा न रहूं! एक से दूसरी चट्टान पर उछलता रहूं! और ऐसे ही प्रस्तर पर बीच बीच में वार करता रहूं!
ले! मैं चट्टानों को थोड़ी और शक्ति दे देता हूं!
ऐसे तू भला कब तक बचेगा नागराज!
और प्रस्तर पर मेरे वारों का असर नहीं होरहा है। ऐसे तो मैं जल्दी ही नीचे गिर जाऊंगा!
कुछ ऐसा करना होगा कि प्रस्तर, अपनी इस शक्ति को रोकने के लिए मजबूर हो जाए। पर ये होगा कैसे?
ओफ! अब सिर्फ मेरे पैर के नीचे की चट्टानें मुझे उछाल ही नहीं रही हैं बल्कि आसपास की चट्टानें मुझ पर हमला भी कर रही हैं!

तेरे विस्फोटक वार मुझे थोड़ा बहुत तो तोड़ सकते हैं। पर पूरी तरह से कभी नहीं! तू मुझको तोड़ नहीं सकता नागराज! पर मैं तुझको तोड़ सकता हूं। और मैं तुझको तोड़कर रहूंगा!
आऽऽऽ ह!
अब तो इसको रोकना ही पड़ेगा! और अगर मेरी शक्तियां इसको नहीं रोक पा रही हैं!...
... तो इसकी अपनी शक्ति ही इसको गिराएगी!
नागराज का घायल शरीर अपने ऊपर हो रहे वारों को नजर-अंदाज करते हुए फिर उछलती चट्टानों पर कूदने लगा-
नागराज के पैर का उसी चट्टान से स्पर्श हुआ, जिस पर प्रस्तर खड़ा हुआ था-
और प्रस्तर के ही आदेश का पालन करते हुए चट्टान कूद पड़ी-
ओऽऽऽ ह! तू मेरे पास आ रहा है! मेरे हाथों से ही मरना चाहता है तू!
तो आ! आ मेरे पास!
प्रस्तर का चट्टानी शरीर नीचे आ गिरा-
अब तू अपनी शक्ति को रोक ले प्रस्तर! वर्ना मैं उसी चट्टान पर कूदता रहूंगा, जिस पर तू खड़ा होगा!

Amaan
राज कॉमिक्स
तूने चाल तो अच्छी चली है नागराज! मुझे सचमुच अपनी यह शक्ति रोकनी ही होगी! लेकिन प्रस्तर के पास शक्तियों का भंडार है! अगर ये शक्ति नहीं तो दूसरी शक्ति तुझको मारेगी! जैसे ये शक्ति!
आऊ sss
अब मुझ पर हमला कर रही चट्टानों पर धारदार पथरीले हथियार उभर आए हैं!
और ये हथियार मेरे अंग काटने को बेताब हो रहे हैं! अब मुझे यह चुनना है कि मैं कटकर मरूं या गिरकर!
क्योंकि अब तो मैं चट्टानों पर पैर तक नहीं रख सकता! इस वक्त ध्वंसक सर्प ही मेरा सबसे बड़ा हथियार हैं! और वे भी प्रस्तर के पथरीले शरीर से छोटे-छोटे टुकड़े ही अलग कर पा रहे हैं! मुझे इसके पूरे शरीर को तोड़ना होगा! एक साथ और जल्दी! वर्ना मेरी मौत निश्चित है!
प्रकृति तो चट्टानों को चूर-चूर करके रेत में तब्दील कर देती है! पर मैं क्या करूं? हां, सूझ गया तरीका!

शीत नागकुमार हिमालय में रहने वाले सर्पों का राजकुमार है और उसमें अद्भुत शीत शक्तियां भरी हैं। विस्तृत रूप से जानने के लिए पढ़ें फन

Amaan
तुम तो ठंडे होने से खुश होने के बजाय नाराज हो गए! लो, मैं तुमको फिर से गर्म कर देता हूं!
एक बार फिर ध्वंसक सर्पों की फौज प्रस्तर पर बरस पड़ी-
और उसके गर्म होते ही उस पर दुबारा बर्फीली पर्त चढ़ने लगी-
एक बार फिर यही प्रक्रिया दुहराई गई-
और फिर-
बस! हमारा काम हो गया है, शीतनाग कुमार! अब मेरा एक ही घूंसा इसके टुकड़े-टुकड़े कर देगा!

तुमने तो कमाल कर दिया नागराज! लेकिन यह संभव कैसे हुआ? तुमने कैसे तोड़ डाला प्रस्तर के चट्टानी शरीर को?
वैसे ही जैसे प्रकृति पत्थरों का गर्व चूर-चूर करती है! रेगिस्तान चट्टानों के टूटने से ही बनते हैं! दिन के सूर्य की बेतहाशा गर्मी और रात को खून जमा देने वाली ठंड के दौरान चट्टानों के आकार बढ़ने और सिकुड़ते रहते हैं!
और आकार में होते इन परिवर्तनों को न सह पाने के कारण चट्टानों में दरार पड़ती रहती हैं! और वे टूटती रहती है। इसी प्रक्रिया को मैंने ध्वंसक सर्पों और तुम्हारी शीत शक्ति की सहायता से प्रस्तर पर आजमाया और उसमें भी दरारें पड़ गईं।
वाह, नागराज वाह!
नागराज और शीतनागकुमार की आंखों से ओझल, पाप क्षेत्र में खुशी की लहर दौड़ रही थी-
हा हा हा! एक मामूली पापी और नागराज की झड़प से जो थोड़ी सी पुण्य और पाप ऊर्जा निकली है उसने ही अवरोध में इतना छोटा द्वार बना दिया है कि एक ऊंगली पार जा सके!
अब पाप और पुण्य के महायुद्ध से जो भीषण ऊर्जा फैलेगी, वह इस द्वार को बड़ा अवश्य कर देगी!
अब प्रस्तर तो खत्म हो गया है नागराज, पर तुमको घायल भी कर गया है और थका भी गया है। तुमको वापस महानगर जाकर थोड़ा विश्राम करना चाहिए!
आराम, हराम है! वैसे भी जिन्दगी में कभी वापस नहीं जाया जा सकता...

जिन्दगी का रास्ता एक ही दिशा में जाता है। मौत की दिशा में! और तुम्हारी जिन्दगी के रास्ते का अंत आ चुका है!
मौत तुम्हारे सामने खड़ी है! पृथ्वी पर राक्षस जाति के आखिरी वंशज चंडकाल के रूप में!
ओह! समझा! यानी ये प्रस्तर तुम्हारे द्वारा ही भेजा गया अजूबा था! लेकिन उसका हाल तो तुमने देख ही लिया है! अब अगर तुम यह नहीं चाहते कि तुम्हारा हाल भी वैसा ही हो तो मुझे इन सबका कारण बता दो, और फिर बगैर तबाही मचाए यहां से चले जाओ!
प्रस्तर को मैंने ही भेजा था! लेकिन वह तुमको हराने या मारने नहीं आया था! सिर्फ मुझको तुम्हारी शक्तियों का नमूना दिखलाने के लिए ही वह तुमसे भिड़ा था...
...अब मैं तुम्हारी शक्तियां जान चुका हूं! अब तुमको मारना मेरे लिए कोई बड़ी समस्या नहीं होगी!

तू बहुत बढ़-चढ़कर बोल रहा है! पहले तू मुझसे निपटकर दिखा! फिर नागराज की तरफ नजरें उठाने लायक भी रहे, तो उससे भी लड़ लेना!
तू मुझको बर्फीली कैद में बन्दी बनाना चाहता है नाग...
...लेकिन चंडकाल को तो चट्टानी कैद भी बन्दी नहीं बना सकती!
तू मेरी नाभि पर वार कर रहा है! पर इससे क्या होगा?
तेरे शरीर में बहता हुए द्रव जम जाएगा! और शरीर के द्रवों का बहाव रुकने से तू बेजान हो जाएगा!
ये तो एक मामूली सा शक्ति परीक्षण था राक्षस! अब तू मेरी असली शक्ति देख!
आऽऽऽह! मैं बेजान तो हो ही नहीं सकता!
लेकिन तेरी इस शक्ति ने मुझे जड़ अवश्य कर दिया है!

Amaan
तू बेजान नहीं हो सकता लेकिन बेहोश तो हो ही सकता है न! मेरा सर्प शक्ति से भरा वार तेरे शरीर के साथ-साथ तेरे दिमाग को भी जड़ कर देगा!
धड़क
आऽऽऽह!
तूने वार तो शक्तिशाली किया है!
मेरा दिमाग सचमुच अंधेरे में डूब रहा है! मेरी ऐसी हालत तो सिर्फ देव कर पाए हैं! और वह भी छल से! तुम्हारी तरह सामने से लड़कर नहीं!... ये इंसानी शरीर धारण करना अगर मेरे लिए मुसीबत बन रहा है तो मुझे इसी मुसीबत को अपनी शक्ति बनाना होगा!
जो चीज़ मुझको तकलीफ दे रही है, उसको अपने शरीर से अलग करना होगा! पंच तत्त्व से बने इस शरीर के तत्त्वों को अलग-अलग करना होगा!
ये क्या हो रहा है? इसके शरीर से छायाएं कैसी निकल रही हैं?

ये छायाएं नहीं, पांच तत्त्वों के अलग-अलग शरीर हैं। जल का अलग, वायु का अलग, पृथ्वी का अलग, अग्नि का अलग और आकाश का अलग!
और ये पांचों तत्त्व मिलकर तुम्हारे पंच तत्त्वों से बने शरीर को सिर्फ एक तत्त्व में बदल देंगे! राख में!

सधम की मेहनत रंग ला रही थी! उसकी योजना सफल हो रही थी-
देखा! पाप ऊर्जा और पुण्य ऊर्जा की भीषण तरंगें वातावरण में तैरनी शुरू हो गई हैं! द्वार का आकार भी बड़ा हो रहा है! अब तो मेरा पूरा एक हाथ इसमें से गुजर सकता है।
जैसे-जैसे चंडकाल और नागराज की शक्तियों का टकराव होगा, यह द्वार और बड़ा होता जाएगा!...
...और फिर इतना बड़ा हो जाएगा कि इसमें से मेरे जैसा पूरा एक प्राणी गुजर सके!
हा हा हा हा हा हा!
चंडकाल की अद्भुत चाल ने वाकई लड़ाई का रुख पलट दिया था-
हा हा हा! तेरे पास तो सिर्फ शीत शक्तियां ही हैं शीतनाग! लेकिन मेरे जलरूप के पास शीत शक्तियों के अलावा और भी शक्तियां हैं! मैं जल को जमाकर बर्फ में बदलने के अलावा उबालकर भाप में भी तब्दील कर सकता हूं!
ले, झेल मेरे 'भाप-गोलों' को!

तू अभी शीतनागकुमार की शक्तियों को जानता नहीं है चंडकाल! शीतनागकुमार का जब फन खुलता है तो वह किसी भी शक्ति को सोख सकता है!...
... और उसी शक्ति का वार पलटकर शक्ति-धारक पर ही कर सकता है!
गजब की शक्ति है तुझमें! इसलिए तुझ पर कोई भयंकर वार करना पड़ेगा!... ले, मैं जल का निर्माण करने वाले दोनों तत्वों हाइड्रोजन और ऑक्सीजन को अलग करके उनका वार तुझ पर करता हूं!
दोनों ही भीषण ज्वलनशील गैसें हैं!...
... ये गैसें तुझको घेर लेंगी और फिर 'अग्नि चंडकाल' का एक ही वार इन गैसों को सुलगा देगा, और तू इन्हीं गैसों की भट्टी में जल मरेगा!
दो 'चंडकाल रूपों' के बीच में शीतनागकुमार घिर गया था-

और नागराज उसकी कोई मदद नहीं कर सकता था-

अब तू बच नहीं सकता, नागराज! मेरे सख्त 'पृथ्वी रूप' का एक ही वार तेरी खोपड़ी खोल देगा!

नागराज इससे भी जोरदार वार झेल चुका है! लेकिन तूने दूसरे तत्वों को अपने शरीर से अलग करके बहुत बड़ी गलती की है! अब तेरा 'पृथ्वी रूप' सख्त तो जरूर है लेकिन चट्टान की तरह भंगुर भी हो गया है, जिसको आराम से तोड़ा जा सकता है!

जिसकी कुंडली तेरे शरीर की हर एक हड्डी को तोड़ डालेगी!

जरूर तोड़ा जा सकता है! लेकिन तब जब मैं तुझको इसका मौका दूंगा! मेरे 'पृथ्वी रूप' में सिर्फ चट्टानें ही नहीं, धातुएं और रसायन भी हैं!

चूंकि ये तेरे 'पृथ्वी रूप' का ही एक अंग है इसलिए ये तुमको बड़े आराम से तोड़ सकता है!
आऊsss! ये क्या मूर्खता कर दी तैंने! अगर मेरा पृथ्वी रूप नष्ट हो गया तो... तो... नहीं! लेकिन ऐसा होगा नहीं! क्योंकि तुम सिर्फ दो हो...
...और हम पांच हैं!
ओsssह! इसके 'वायुरूप' ने मुझको उठाकर दूर फेंक दिया है!
और शीतलवा कुमार को भी दो-दो चंडकाल रूपों ने घेर रखा है! इस विसंगति को दूर करना होगा! मुझे भी और साथी चाहिए!...

नागू ऐसा इच्छाधारी सांप है जिसके पास चमत्कारी मस्तक मणि है।

RCJ

ⓥ अदृश्य मानव के बारे में विस्तारपूर्वक जानने के लिए पढ़ें **नागराज की मौत व अदृश्य मानव।**

सौडांगी ने चंडकाल के 'वायुरूप' कोअपनी अद्भुत तांत्रिक शक्तियों का प्रयोग करके रोक रखा था-
और चंडकाल की एक बड़ी शक्ति, 'आकाश रूप' को भी अदृश्य मानव यानी प्रोफेसर श्रीकांत के रूप में एक बराबर का प्रतिद्वन्द्वी मिल गया था-
परन्तु असली मुकाबला अभी भी नागराज और चंडकाल के 'पृथ्वी रूप' के बीच में था-
तूने मेरे दूसरे रूपों को मेरी मदद करने से रोककर कोई बड़ा काम नहीं किया है नागराज! मेरी 'पृथ्वी-रूप' की शक्ति अकेली ही तुझको मारने में सक्षम है!
ओह! अब ये अपने शरीर के अंदर मौजूद घातक रसायनों को उगल रहा है!
जो मेरे शरीर को गला सकते हैं!

एक ही रास्ता है! इस 'अम्लीय हमले' से बचने के लिए मुझको इच्छाधारी कणों में बदलकर बचना होगा!
लेकिन-
ओफ़! ये अम्लीय बादल तो मेरी स्थिति को भांप ले रहे हैं। ये मेरे पीछे पड़े हुए हैं!...
...और तीन पलों के बाद मुझको सामान्य स्थिति में आना ही होगा!
फिर मैं कैसे बचूंगा अम्लीय बारिश से?
दूसरे चंडकाल रूप भी अपने-अपने प्रतिद्वंद्वियों पर हावी हो रहे थे-
तेरी शक्ति तेरी चमत्कारी मणि की किरणों के कारण है! एक बार इन जलती चट्टानों की राख तेरी मणि को ढक ले...
...तो फिर तू शक्ति-हीन हो जाएगा मणिधारी नाग!
आऽऽऽह!
नागू!

उसकी हालत पर अफसोस जाहिर करने के बजाय, अब अपनी हालत देख! तुम नागों की सीमित शक्तियां हमारी असीमित शक्तियों का मुकाबला नहीं कर सकतीं।
ले! देख मेरी जलधार की शक्ति, जो अब तेरी मौत साबित होगी!
सौडांगी और अदृश्य मानव भी अपने प्रतिद्वन्द्वी पर हावी नहीं हो पा रहे थे-
आऽऽऽह! पतली जलधारें मुझको कस भी रही हैं, और मेरे शरीर को छेद भी रही हैं! मैं इनको जमा जरूर सकता हूं, पर नतीजा फिर भी वही होगा!
लेकिन मदद ज्यादा दूर नहीं थी-
मुझे चंडकाल के शक्तिशाली संकेत मिल रहे हैं ध्रुव! आओ, हमको उसे पकड़ना होगा!
चलो!
चंडकाल का चाहे जो भी हाल होना था-
लेकिन जिस कारण के लिए यह सारा षड्यंत्र रचा गया था, वह सफल अवश्य हो रहा था-
पाप क्षेत्र के अंदर-
द्वार और बड़ा हो रहा है! जल्दी ही यह इतना बड़ा हो जाएगा कि मैं इसके पार निकल कर त्रिमुंड हासिल करने जा सकूं!

Amaan
इस षड्यंत्र को नाकाम करने के लिए नागराज को यह लड़ाई जल्दी से जल्दी खत्म करनी थी-
लेकिन फिलहाल तो लड़ाई के बजाय नागराज का ही खत्म होना तय नजर आ रहा था-
आऽऽऽह! मेरे सामान्य रूप में आते ही मेरी त्वचा को इस अम्ल ने गलाना शुरू कर दिया है!
और ये अम्लीय बादल मेरा पीछा छोड़ने का नाम ही नहीं ले रहे हैं! ये चट्टान अभी तक तो मुझे बचा रही है लेकिन जल्दी ही ये अम्ल इसको भी गला देगा! इस अम्लीय बादल की काट सोचनी होगी! लेकिन अम्ल की काट क्या हो सकती है?
हां, क्षार! क्षार, अम्ल से प्रतिक्रिया करके उसको पानी और लवण वाली साल्ट्स में बदल देता है! पर यहां पर क्षार आएगा कहां से?
मेरे सर्पों का विष! सर्प विष में एल्केलायड्स वाले क्षारीय तत्व होते हैं! वह विष इन अम्लीय बादलों को नष्ट कर देगा!
चट्टान की ओट में सैकड़ों स गराज के शरीर से र आकर विष की फुहार अम्लीय बादलों की तरफ उगलने लगे-
और-
ओह! अम्लीय बादल खत्म हो रहे हैं!
तूने मेरा यह वार विफल कर दिया!

अब मैं और ज्यादा खिलवाड़ नहीं करूंगा! अपनी सबसे भीषण शक्ति का प्रयोग करूंगा तुझको मारने के लिए! और तेरे मरने के साथ ही तेरे शरीर से निकले तेरे साथी भी कमजोर पड़ जाएंगे!
देख मेरा विराट पृथ्वी रूप!
ध्रुव और धनंजय भी चंडकाल के पीछे-पीछे घटनास्थल पर आ पहुंचे थे-
ओह! यहां पर तो चंडकाल नागराज से भिड़ा हुआ है! और साथ ही साथ उसके और कई रूप दूसरे नागों से भिड़े हुए हैं!
कुछ समझ में नहीं आ रहा है कि चंडकाल नागराज से क्यों भिड़ रहा है?

इस संबंध मे विस्तार से जानने के लिए पढ़ें: **विध्वंस**

सच कह रहे हो नागराज! तुममें से कोई जिन्दा नहीं बचेगा! क्योंकि अब द्वार लगभग इतना बड़ा हो गया है कि मैं इसके पार पृथ्वी पर आ सकूं!
बस, कुछ पल और चंडकाल अगर टिका रहा तो द्वार पूरा खुल जाएगा!
लेकिन ध्रुव, चंडकाल को 'कुछ और पल' देने के मूड में बिलकुल नहीं था-
जैसे नागराज पर दूसरे सर्प निर्भर रहते हैं वैसे ही अग्नि, वायु, जल और आकाश जैसे तत्व, अपने अस्तित्व के लिए पृथ्वी पर निर्भर रहते हैं! अगर 'पृथ्वी चंडकाल' को नुकसान पहुंचेगा तो बाकी सभी चंडकालों की शक्ति भी क्षीण हो जाएगी! पृथ्वी चंडकाल को कैसे भी तोड़ो!
पृथ्वी को सिर्फ एक ही चीज तोड़ सकती है! भूकंप! भूकंप जैसी स्थिति पैदा करनी होगी! इसके 'पृथ्वी शरीर' में कंपन पैदा करने होंगे!
तोड़ें तो कैसे तोड़ें ध्रुव? इस विशाल शरीर पर तो हमारे वार ऐसे सिद्ध हो रहे हैं जैसे जलयान पर कंकड़!
पृथ्वी को भला क्या चीज तोड़ सकती है?

कहानी 67 पेज से जारी

परकाले
ये कोई बड़ी बात नहीं है! इसके इस रूप में मेरा स्वर्ण पाश इसको मेरा बंदी तो शायद न बना पाए, लेकिन इसके शरीर में कंपन जरूर प्रवाहित कर सकता है!
मेरा स्वर्ण पाश, अधिकतम क्षमता पर कंपन पैदा कर रहा है! इससे तेज कंपन पैदा करना इसके बस के बाहर की बात है!
ओह! नागराज तुम्हारे पास तो ऐसे सर्प जरूर होंगे जो कंपन पैदा कर सकें! उनको चंडकाल के 'पृथ्वी रूप' पर छोड़ो!
ऐसे सर्प मेरे पास नहीं हैं! जिनके अंदर कंपन पैदा करने की शक्ति हो!

ये तो कांप रहा है, और इसके शरीर में दरारें भी पड़ रही हैं! पर ये टूट नहीं पा रहा है!
अभी इसको और कंपन चाहिए! कंपन तेज करो धनंजय!
रैटलर सर्प! उनकी दुम में एक ऐसा अंग होता है, जो तेज तरंगें पैदा करता है! तुम्हारे शरीर में तो हर प्रकार के सर्प मौजूद हैं! रैटलर प्रजाति सर्प भी जरूर होंगे!
अच्छा याद दिलाया, ध्रुव!
रैटलर प्रजाति के सर्प तो मेरे शरीर में बेहिसाब मात्रा में मौजूद हैं!

रैटलर सर्प, 'पृथ्वी चंडकाल' के थरथराते शरीर पर चिपकते चले गए! और बेहिसाब रैटलरों की दुमों के सम्मिलित कंपनों ने धनंजय के स्वर्ण पाश के कंपनों के साथ मिलकर-

पृथ्वी चंडकाल के शरीर की दरारों को और गहरा करना शुरू कर दिया-
और 'पृथ्वी-चंडकाल' का शरीर टूटने लगा-

ओफ़! ये नहीं हो सकता! द्वार पूरा खुलने से ठीक पहले ही चंडकाल हारने लगा है! अब द्वार फिर से छोटा होता जाएगा! और मैं हमेशा के लिए पाप क्षेत्र में ही... नहीं! मैं यहां पर नहीं रहूंगा! मेरी योजना पूरी होगी!

होगी!
अरे! पाप क्षेत्र के अंदर से एक हाथ निकलकर नागराज को अंदर ले जा रहा है!

नागराज को बचाओ धनंजय!

घबराओ मत ध्रुव! मैंने स्वर्णपाश, नागराज में फंसा दिया है! मैं उसको पाप क्षेत्र से बाहर खींचकर ही रहूंगा!

पाप और पुण्य ऊर्जा का बिखराव रुकते ही, अवरोध में बना द्वार भी बंद होना शुरू हो गया था-

लेकिन धनंजय ने स्वर्ण पाश का खिंचाव कम नहीं होने दिया था-

एक भयंकर रस्साकशी जारी थी! नागराज के मित्र भी इस रस्साकशी में शामिल हो गए थे-

आखिर उनकी संयुक्त शक्ति रंग लेही आई-

पाप क्षेत्र के अवरोध का द्वार बंद होने से पहले ही नागराज को बाहर खींचा जा चुका था-

तुम ठीक तो हो न, नागराज!
हां! मैं तो ठीक हूं! लेकिन पाप क्षेत्र में कुछ ही पल रहने के दौरान जो मुझको पता चला है वह ठीक नहीं है! मधम अभी भी पाप क्षेत्र से निकलने की योजना बना रहा है...
कैसी योजना नागराज?
उसकी योजना किसी भी तरह से पाप क्षेत्र से बाहर निकलकर त्रिमुंड हासिल करने की है! उससे मानसिक संपर्क के दौरान मुझको त्रिमुंडों की स्थिति और उनकी विशेषता के बारे में भी पता चल गया है! त्रिमुंड तीन अलग-अलग स्थानों पर पड़े हुए जलचर, थलचर और एक नभचर के मुंड हैं! और इनका संयोग कराने पर जो त्रिमुंड बनेगा, वह किसी भी पाप शक्ति को खींचकर उस शक्ति को त्रिमुंड धारक का गुलाम बना सकता है!
हम जानते हैं त्रिमुंडों के बारे में! सचमुच अगर त्रिमुंड किसी के हाथ लग जाए तो उसके अधीन इतनी पाप शक्तियां हो जाएंगी कि उनकी मदद से वह पूरे ब्रह्माण्ड में फैले पुण्य को नष्ट कर सकेगा!
पाप क्षेत्र के अवरोध में द्वार खोलने का तरीका मधम को पता चल गया है! देर-सबेर वह पाप और पुण्य ऊर्जा का मिश्रण फैलाकर द्वार को खोल ही लेगा! हमारे सिरों पर एक तलवार सी हमेशा लटकती रहेगी!
तुम ही बताओ, नागराज! इस समस्या को स्थायी रूप से कैसे हल किया जा सकता है?
मधम से पहले त्रिमुंडों को स्वयं हासिल करके! इससे पहले कि त्रिमुंड की शक्ति से मधम हम पर राज करे...
...हम इस त्रिमुंड को हासिल करके मधम और दूसरे पापियों को अपना गुलाम बना लेंगे!

Amaan
इससे क्या अड़चन है? सधस हमको रोकने के लिए 'पाप क्षेत्र' के पार तो आ ही नहीं सकता है!
नहीं, ध्रुव! सधस चुप नहीं बैठेगा! वह पाप क्षेत्र में बैठकर भी ऐसी कोई चाल चल सकता है जिससे हम त्रिमुंड तक पहुंच ही न सकें! वह दुनिया पर ऐसी कोई विपत्ति बरसा सकता है, जिसमें हम उलझे रह जाएं और त्रिमुंड हासिल करने जा ही न पाएं!
ठीक है नागराज!
अपनी 'मणि शक्ति' का प्रयोग करके हमको तुरन्त नागद्वीप पर पहुंचाओ नागू! इस दुष्कर अभियान पर हमको नागद्वीप-वासियों की आवश्यकता पड़ेगी!
नागराज ठीक कह रहा है ध्रुव! चंडकाल का आजाद होकर तबाही मचाना इस बात का एक प्रत्यक्ष उदाहरण है!
मैं अपने मित्रों को एकत्रित करके त्रिमुंड की तलाश में जाऊंगा ध्रुव! तब तक सधस से दुनिया को बचाना तुम्हारी जिम्मेदारी होगी!
मैं जिस काम के लिए आया था, वह तो हो गया ध्रुव! चंडकाल फिर से हमारी गिरफ्त में आ गया है!
अब इसको जल्दी से जल्दी स्वर्ण नगरी ले जाकर फिर से बंदी बनाना है!
तुमने कहा था कि तुम त्रिमुंड के बारे में जानते हो! क्या है ये त्रिमुंड? और अगर ये पाप और पापियों को कैद कर सकता है तो इसका प्रयोग अभी तक क्यों नहीं किया गया?
इतनी विस्तारपूर्वक जानकारी मेरे पास नहीं है! लेकिन स्वर्ण नगरी में कुछ लोग इसके बारे में अवश्य जानते हैं! अगर तुम जानना ही चाहते हो तो मेरे साथ स्वर्ण नगरी चल सकते हो!
जानना ही होगा वर्ना मुझे खाना नहीं पचेगा!
स्वर्ण नगरी में-
त्रिमुंड उन तीन पिशाच शिवगणों के मुंड हैं, जिनको महादेव ने थल, जल और नभ के क्षेत्रों में अपना दूत बनाकर नियुक्त किया था!
परन्तु उन्होंने अपनी शक्ति का दुरुपयोग किया! स्वयं तीनों लोकों का स्वामी बनने की चेष्टा की...

उन्होंने पापियों को डरा धमकाकर सुधारने या नष्ट करने के बजाय उनको अपना गुलाम बनाकर सेनाएं तैयार करनी शुरू कर दीं... तब मजबूर होकर महादेव ने स्वयं तीनों पिशाचों से युद्ध किया और उनको मृत्यु के घाट उतार दिया!
अब अगर उन तीन मुंडों को फिर से जोड़ दिया जाए तो दासता शक्ति जाग्रत हो उठेगी और सभी पाप एवं पापी उस त्रिमुंड की तरफ खिंच जाएंगे।
और त्रिमुंड को उस वक्त धारण करने वाला उन सभी पापियों का स्वामी बन जाएगा!
फिर ये त्रिमुंड धारक की इच्छा पर निर्भर करेगा कि वह उन पाप शक्तियों का किस प्रकार से प्रयोग करता है!
इस प्रकार पिशाच तो मर गए, परन्तु उनके गुलाम पापियों की भक्ति कम नहीं हुई! इस गुलामी या दासता की शक्ति को काटने के लिए महादेव ने उन तीनों मुंडों को अलग-अलग एवं दुर्गम स्थानों पर डाल दिया!
इसी कारण से आज तक किसी पुण्यात्मा ने भी त्रिमुंड को प्राप्त करके सभी पापियों और पाप को कैद करने का प्रयास नहीं किया! क्योंकि यह एक दुधारी तलवार है! इससे पाप नष्ट भी हो सकते हैं और बढ़ भी सकते हैं। इसके अलावा...
आहsss
क्या हुआ ध्रुव? तुम ठीक तो हो न?

ध्रुव! जवाब दो ध्रुव!
लेकिन कोई जवाब नहीं आया! ध्रुव का दिमाग कहीं और ही था-
या ध्रुव के दिमाग में कोई और ही था-
ध्रुव! मेरी मदद करो ध्रुव! मैं 'पाप क्षेत्र' में कैद हूं! सधम मेरा रूप लेकर पृथ्वी पर पहुंच गया है! उसने मेरी नागशक्तियों की भी प्रतिलिपी बना ली है। अब उसके पास भी नागशक्तियां हैं! उसको त्रिमुंड पाने से रोको ध्रुव! वर्ना पूरी पृथ्वी पाप के सागर में डूब जाएगी!
ध्रुव!
क्या बात है ध्रुव! तुमको एकाएक यह क्या हो गया था?
बहुत गड़बड़ हो गई है धनंजय! हमको नागराज को त्रिमुंड पाने से रोकना होगा!... वह नागराज नहीं है! सधम ने नागराज का रूप ले लिया है!
ये तुमको कैसे पता चला ध्रुव?
ध्रुव अपने दिमाग में उभरी नागराज की सारी बात बताता चला गया-
ओह, समझा! यह वही सधम की रुकावट डालने वाली चाल है, जिसका जिक्र नागराज ने किया था! सधम तुमको नागराज के रूप में संदेश भेजकर बहका रहा है!
हो सकता है धनंजय! लेकिन अगर यह सच हुआ तो?
इस संदेश को सच मानकर तुम नागराज को रोकोगे और उस दौरान सधम त्रिमुंड तक पहुंचने की योजना बना लेगा!
लेकिन अगर सधम ही नागराज है तो वह वैसे ही त्रिमुंड हासिल कर लेगा! हमारे पास और कोई रास्ता नहीं है!

Amaan
मेरा शक गलत हो या सही हमको नागराज को रोकना ही होगा!
सिर्फ शक के आधार पर नागराज को रोकना ठीक तो नहीं लगता ध्रुव! लेकिन तुम कहते हो तो रोकना ही पड़ेगा! सबसे पहले नागराज की स्थिति का पता लगाना पड़ेगा!
नागराज, नागद्वीप से अपने अभियान पर कूच करने की तैयारी में था-
मैंने आप सबको स्थिति की गंभीरता से अवगत करा दिया है! अब चूंकि हम त्रिमुंड को हासिल करने की ठान चुके हैं तो सधन भी चुप नहीं बैठेगा! इसलिए हमको तीनों मुंड जल्दी से जल्दी हासिल करने होंगे!
और जल्दी से मुंडों को हासिल तभी किया जा सकता है, जब उनको एक साथ प्राप्त किया जाए, इसलिए हम तीन गुटों में काम करेंगे! जल में पड़ा मुंड नागू, महाव्याल की मदद से हासिल करेगा!
आकाश यानी नभ में रखा मुंड महात्मा कालदूत, सौडांगी एवं विसर्पी प्राप्त करेंगे, और शीतनाग-कुमार, सिंहनाग और नागार्जुन थल यानी हिमालय पर पड़ा मुंड अपने कब्जे में लेंगे!

और तब तक मैं उस स्थान पर पहुंचने की कोशिश करूंगा, जहां पर तीनों मुंडों को जोड़ने से वह त्रिमुंड सारे पाप और पापियों को अपने अंदर खींच लेगा।

उस स्थान पर हम कणों में बदलकर नहीं पहुंच सकते। इसलिए वहां पहुंचने का रास्ता हमको खुद चलकर तय करना होगा।

ओफ्! ये तो समस्या हो गई! हम भी चार स्थानों पर एक साथ नहीं रह सकते। हमको भी अपने दूसरे मित्रों से संपर्क करना होगा।...

मैं तीनों स्थान, जल थल और नभ में एक साथ तो मौजूद नहीं रह सकता पर अदृश्य मानव की मदद से जहां पर भी मेरी जरूरत होगी, वहां पर मैं तुरन्त पहुंच जाऊंगा।

... ताकि वे अलग-अलग स्थानों पर नागराज के मित्रों को मुंड प्राप्त करने से रोक सकें!

साथ ही साथ मामरी से भी संपर्क करो। अगर महात्मा कालदूत को रोकना है तो हमको किरीगी एवं मामरी की संयुक्त शक्ति की आवश्यकता पड़ेगी। नभ में ये दोनों धुरधंर कालदूत विसर्पी एवं सौडांगी को रोकेंगे।

और मैं सबसे पहले नागराज के उन मित्रों को रोकूंगा जो जलचर पिशाच का मुंड हासिल करने आ रहे हैं।
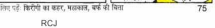
तब तक तुम अपना एक प्रतिनिधि जिंगालू के पास भेजो! और उससे किरीगी से संपर्क करने को कहो।

थल मार्ग में नागराज के मित्रों को कैसे रोकेंगे?

यह कार्य जिंगालू अकेले ही कर सकता है।

❀ जिंगालू एवं किरीगी के विषय में विस्तारपूर्वक जानने के लिए पढ़ें: किरीगी का कहर, महाकाल, बर्फ की चिता

☺ महाव्याल, चमत्कारी शक्तियों से युक्त जल सर्पों का नायक है। इस विषय में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें: नागिन

★ निर्झर = झरना

क्योंकि हम तुमको 'जीवन निर्झर' के अंदर जाने ही नहीं देंगे!
ओह! स्वर्णनगरीवासी! पर इसके साथ यह सामान्य मानव कौन है जो हमको चुनौती देने का दुस्साहस कर रहा है!
मैं जानता हूं इसको!...
...यह तुम क्या कह रहे हो ध्रुव? क्यों रोकना चाहते हो तुम हमको?
क्योंकि तुम इसके अंदर से जलपिशाच के मुंड को ले जाकर नकली नागराज को सौंपना चाहते हो! हमको शक है कि वह असली नागराज न होकर नागराज के रूप में सधम है!
ये क्या बकवास है? नागराज को पहचानने में मैं कभी धोखा नहीं खा सकता! नागराज एकदम असली है!
...लेकिन हमारे पास वक्त कम है!
चाहे तुम सही हो! लेकिन फिर भी हम यह खतरा मोल नहीं ले सकते!
तुम सधम के प्रभाव में आकर हमारे रास्ते का रोड़ा बन रहे हो ध्रुव! वैसे तो मैं पहले तुमको समझाता...
ओह! यानी नौबत हाथापाई पर आने वाली है!

तो फिर तुम्हारी असली शक्ति मणि को तुम्हारे मस्तक से हटाना होगा ...
ये बच्चों के हथियार, मेरी मणि को मस्तक से हटाना तो क्या छू तक नहीं सकते!
इनको रोककर रखो, नागू! मैं मुंड लेने के लिए 'जीवन शिखर' में उतर रहा हूं!
तुम भी कहीं नहीं जाओगे महाव्याल!
धनंजय का स्वर्ण पाश तुमको यहां से हिलने भी नहीं देगा!
जल में चल रहे इस युद्ध के साथ-साथ

नभ वाली आकाश में भी एक युद्ध शुरू होने वाला था-

भला नभ में ऐसी कौन सी जगह हो सकती है जहां पर नभ पिशाच का मुंड रखा हो! आकाश में बादलों के अलावा तो और कुछ होता ही नहीं है!

देखो न, सामने घने बादलों के अलावा तो और कुछ है ही नहीं!

नागराज के अनुसार मुंड इस नभक्षेत्र में कहीं पर है!

लेकिन उनको तुरन्त पीछे हट जाना पड़ा-
ओह! चक्रवात मुझ पर बिजली की तलवार से हमला कर रहा है। चक्रवात को मुंड की सुरक्षा के लिए तैनात किया गया है!
इसके पास में तो क्या कोई भी चीज नहीं पहुंच सकती है!
फिर हम मुंड को हासिल कैसे करेंगे महात्मन?
वायु के चक्रवात को सिर्फ एक चीज ही पार कर सकती है! वायु का दूसरा चक्रवात!
मैं स्वयं एक चक्रवात पैदा करके उस चक्रवात द्वारा मुंड को उठा लूंगा!
महात्मा कालदूत का चक्रवात मुंड को उठा पाता या नहीं, यह पता नहीं चल सका-
क्योंकि-
अरे! मेरे चक्रवात से एक 'अग्नि-लहर' आकर टकरा रही है! इससे चक्रवात के बीच की वायु गर्म होकर बिखर रही है, और मेरा चक्रवात टूट रहा है!
कौन है यह धृष्ट जो कालदूत के कार्य में व्यवधान डाल रहा है?
ये प्रचंड अग्नि लहर...

कहानी 83 पेज से जारी

ॐ सामरी एवं किरीगी के विषय में जानने के लिए पढ़ें: किरीगी का कहर, सामरी की ज्वाला एवं महाकाल

तूने कालदूत को चुनौती दी है किरीगी! और वह भी बिना यह जाने कि कालदूत इस युग के सर्वश्रेष्ठ योद्धाओं में से एक है! अब ले, कालदूत तेरी आत्मघाती इच्छा को अवश्य पूरा करेगा!
किरीगी अपने आप को योद्धा नहीं मानता! लेकिन चुनौती मानने के बाद कभी पीछे कदम भी नहीं हटाता! आज मैं तेरा सर्वश्रेष्ठ योद्धा होने का भ्रम तोड़ दूंगा!
ओह! तूने... तूने कालसर्पों को काट डाला! असंभव!
मेरे खड्ग में मेरी मानसिक घोर ऊर्जा प्रवाहित होती है कालदूत! ब्रह्माण्ड में ऐसी कोई चीज नहीं है, जिसको मेरा खड्ग न काट सके!
मैं इस मायावी को रोकती हूं विसर्पी! किरीगी, महात्मा कालदूत से पार नहीं पा सकता! तब तक तुम मुंड को हासिल करने का प्रयत्न करो!
ठीक है मौडांगी!
मैं... मैं प्रयत्न करती हूं!

इसी वक्त- समुद्र के तल पर-

ओफ्! यहां के खौलते पानी से तो मुझको स्वर्ण मानवों द्वारा दिया गया यह यंत्र बचा रहा है, जिसके कंट्रोलों को नियंत्रित करके मैं अपने शरीर के तापमान को सामान्य बनाए हुए हूं! ... लेकिन नागू की मणि के वार से भला मुझको कौन बचाएगा? पानी में तो फुर्ती से हरकत कर पाना भी मुश्किल है!

तू पानी में भी मणि के किरण वार को बचा पा रहा है! वार बदलना होगा।

अब मैं तुझ पर नहीं उन हवा के बुलबुलों पर वार करूंगा जो तेरे मुंह से निकले हैं! ये बड़े होकर तेरे पूरे शरीर को अपनी गिरफ्त में ले लेंगे! तू पानी में सांस ले सकता है, हवा में भी सांस ले सकता है, लेकिन उस हवा में सांस नहीं ले सकता जिसके अंदर की जीवनदायिनी ऑक्सीजन खत्म हो गई है! जैसी कि इन बुलबुलों के अंदर की हवा!

धनंजय और महाव्याल के बीच का युद्ध भी जोर पकड़ रहा था-
तेरा स्वर्ण पाश मेरों-गैरों को पकड़ सकता होगा, स्वर्ण मानव! महाव्याल की सामुद्रिक शक्तियों के सामने इसका शिकंजा टिक नहीं पाएगा!
आsss ह! धनंजय की शक्तियों को भी मामूली मत समझ महाव्याल!
मैं तुमको इस लायक ही नहीं छोड़ूंगा कि तू हिल भी सके!
ऐसा है तो इन प्रकाश पुंजों को बुझाना होगा!
फूsss
आsss ह! तेरे द्वारा छोड़े गए प्रकाशपुंज मेरे शरीर को जड़ बना रहे हैं! कैसे? जादू है यह?
यह जादू नहीं, विज्ञान है महाव्याल! ये प्रकाशपुंज तेरी त्वचा को चीरकर तेरे स्नायु तंत्र तक पहुंच रहे हैं और उसके जरिए तेरे दिमाग तक पहुंचने वाले संकेतों में व्यवधान पैदा कर रहे हैं!
महाव्याल की उस फुंकार से उसकी कंठमाला में लगी सीपियां अलग होकर अपना आकार बढ़ाने लगीं-
और प्रकाशपुंज उन सीपियों के अंदर कैद होकर गायब होने लगे-

अब वार करने की बारी महाव्याल की थी-
तूने अपना वार कर लिया स्वर्ण मानव! अब देख महाव्याल की महाशक्ति!
जल भंवरें धनंजय के अंगों को अलग-अलग दिशाओं में खींचने लगीं-
ध्रुव भी शक्तिशाली नागू के सामने अपना दम तोड़ने ही वाला था-
आऽऽऽह! ये बुलबुला तो और बुलबुलों को अपने अंदर खींचता जा रहा है! घुटन बढ़ती ही जा रही है! अगर मैं किसी तरह से नागू की मणि को हटा सकूं तो...
मेरी मणि तक अब कुछ भी नहीं पहुंच सकता! चंडकाल के पिघली चट्टान के वार के बाद मैंने ऐसा इंतजाम कर दिया है कि मेरी मणि शक्ति को कोई क्षीण न कर सके!
फिर तो... मुझे ये... कोशिश... अपने हाथों... अक्... से ही करनी... होगी!
आऽऽऽह!
मेरी मणि को स्पर्श करने से तुमको ही झटका लगेगा ध्रुव! और ये मत समझ कि मैं भी अगर बुलबुले के अंदर आ गया हूं तो मेरा दम घुट जाएगा!
अपनी मणि शक्ति से मैं किसी भी वातावरण में से जीवनदायी ऑक्सीजन को अलग करके सांस ले सकता हूं! कॉर्बन-डाइ-आक्साइड की इस हवा में से भी मैं ऑक्सीजन खींच... अक्!
ये... ये मुझे क्या हो रहा है! मुझे... मुझे चक्कर क्यों आ रहे हैं?
नागू का दिमाग असंतुलित होते ही ध्रुव की वायु कैद भी गायब होने लगी-

यह अजीबो-गरीब प्राणी जरूर मुंड का रक्षक है। और इसके गोले में रखे द्रव के सिर्फ स्पर्श करने से मेरी कमीज की बाजू गल गई है! ...

... मैं समझ गया! यह 'जीवन निर्झर' का प्राणी है! इसके गोलों में वे रसायन मौजूद हैं जो जीवन की या तो उत्पत्ति करते हैं, या उसको नष्ट कर सकते हैं!

और किन गोलों में कौन सा द्रव भरा है यह जानना असंभव है!

फिर भी मुझको तो इस निर्झर में घुसना ही होगा ! चाहे मरूं या जिऊं!
ध्रुव, उस प्राणी के लहराते अंगों को अपनी फुर्ती से छकाता हुआ उस मुहाने के अंदर घुसने की कोशिश करने लगा-
धनंजय महाव्याल के वार से बचने का तरीका सोच रहा था-
आऽऽऽह! ये भंवरें मेरे शरीर को अलग-अलग दिशा में इसलिए खींच पा रही हैं क्योंकि ये खुद अलग-अलग दिशाओं में घूम रही हैं!
इनकी शक्ति नष्ट करने का एक ही तरीका है कि इनको आपस में ही भिड़ा दिया जाए!
यह काम आसान नहीं है! मुझे अपनी शारीरिक शक्ति के साथ-साथ मानसिक शक्ति भी जोड़नी होगी!
तोड़ना होगा इस जलचक्र को!
धनंजय की कोशिश आखिरकार रंग ले ही आई-
दोनों विपरीत दिशा में घूम रही भवरों ने एक दूसरे को ही नष्ट कर दिया-
महाव्याल के इस आश्चर्य से उबर पाने से पहले ही-
धनंजय के उस वार ने उसके होश छीन लिए-

महाव्याल और नागू के होश संभाल पाने से पहले ही धनंजय भी ध्रुव के पीछे-पीछे, मुंड रूपक प्राणी की भुजाओं को धकाता हुआ, चट्टानी गुफा के अंदर जा पहुंचा था-
हम अंदर तो आ गए हैं ध्रुव! और मुंड तक पहुंच भी गए हैं! लेकिन अब बाहर निकल पाना असंभव है, क्योंकि गुफा के मुहाने को इस प्राणी ने पूरी तरह से ढक लिया है!
यह खतरनाक होगा, ध्रुव! इस प्राणी के बारे में हम कुछ भी नहीं जानते! हमारे साथ-साथ यह भी द्वार के जरिए हमारे पीछे आ सकता है! और फिर यह क्या तबाही मचाएगा, यह कहना मुश्किल है!
तुम ठीक कह रहे हो धनंजय, पर एक समस्या और है! नागू और महाव्याल को होश संभालने में ज्यादा वक्त नहीं लगेगा! अगर हम इस प्राणी से निपटकर गुफा से बाहर निकल भी गए तो भी मुंड को उनसे शायद न बचा पाएं! इसका भी रास्ता हमको सोचना होगा!
तुम अपनी मणि की मदद से द्वार बना सकते हो धनंजय! जो हमको यहां से बाहर निकाल सके!
फिलहाल तो इस प्राणी से निपटने का रास्ता सोचो ध्रुव! अब यह अपने घातक द्रव जल में मिला रहा है! जल्दी ही ये हमारे शरीरों को गला डालेगा!
ओफ्फ! अगर हम किसी तरह से द्रवों का बहना रोक सकें तो...
...हां! एक तरीका है तो! उसको आजमाने से मेरी जान को खतरा जरूर है, लेकिन ऐसे भी जान कौन सी बची जा रही है!
तुम किस तरीके की बात कर रहे हो ध्रुव?

तुम्हारे द्वारा दिए गए इस यंत्र की धनंजय! यह यंत्र पहनने वाले के शरीर के तापमान को सैकड़ों डिग्री से लेकर शून्य से कई डिग्री नीचे तक बनाए रख सकता है!
यह प्राणी खौलते पानी में रहने का आदी है और इसी कारण से इसके रसायन भी तरल अवस्था में हैं! अगर मैं यह यंत्र इसको पहना दूं, और इसको शून्य से नीचे के तापमान पर फिक्स कर दूं तो इसका शरीर और इसके रसायन दोनों ही जम जाएंगे और फिर वे रसायन न तो पानी में घुलेंगे और न ही हमको नुकसान पहुंचा पाएंगे!
लेकिन...लेकिन इतनी देर तक तुम यह गर्मी कैसे सहन करोगे? तुम्हारी तो जान पर बन आएगी!
कुछ भी हो धनंजय! अगर जान की बाजी लगाकर जीत मिलनी है तो ये ही सही!
वह यंत्र उस प्राणी के 'धड़' पर कस गया-
आऽऽऽह! इस पर असर हो रहा है धनंजय! बस, अब ये दोनों कड़े इनको इसके ऊपर वाले हिस्से पर कसने हैं! फिर इसका पूरा शरीर ठंडा हो जाएगा!
आऽऽऽह! ये खतरे को भांप गया है! अब इसके वार और तेज हो रहे हैं! तुम ठीक तो हो न ध्रुव!
अभी तक तो ठीक हूं! लेकिन ज्यादा देर तक नहीं रहूंगा! फटाफट काम करना होगा धनंजय!
जब इरादे पक्के हों-
तो मंजिल मिलने में देर नहीं लगती है-
शिकंजे उस प्राणी के शरीर पर कस गए और उसके खतरनाक रसायन जमते चले गए-
आऽऽऽह!
घबराओ मत ध्रुव! हम मुंड लेकर बाहर आ चुके हैं! मैं अभी द्वार बनाकर तुमको स्वर्ण-नगरी में ले चलता हूं!

लेकिन द्वार बना पाने से पहले ही-
मेरी मणि! किसने छीना है मेरी मणि को?
हमने वाली महाव्याल ने! अब जब तक तुम जल पिशाच का मुंड हमको दे नहीं देते तब तक यहां से जा नहीं सकते!
समय से पहले होश में आ गए तुम दोनों!
यह मत समझना महाव्याल कि मैं तुम्हारी सेना को देखकर डर जाऊंगा! मैं अकेला ही पूरी सर्प सेना का मुकाबला कर सकता हूं! लेकिन इस वक्त मेरा यहां से जाना जरूरी है, वर्ना ध्रुव की जान खतरे में पड़ जाएगी!
इसका तो सीधा सा तरीका है! मुंड मेरे हवाले कर दो और अपने दोस्त की जान बचा लो! मुंड के बदले जान का सौदा महंगा नहीं है!
ध्रुव की जान के लिए मैं ऐसे एक तो क्या हजार मुंड भी दान कर सकता हूं! ले ये मुंड और मुझको मेरी मणि वापस दे महाव्याल!
यह सौदा ध्रुव की जान पर तो नहीं, लेकिन अरबों मानवों की जान पर भारी पड़ने वाला था-

क्योंकि वहां से दूर नभ क्षेत्र में दूसरे मुंड को हासिल करने का प्रयास जोरों पर था-
आऽऽऽ ह! मैं तो इस बवंडर के पास भी नहीं फटक पा रही हूं! राजदंड, तूने मुझे उड़ने की शक्ति प्रदान की है, अब तू ही मुझे मुंड तक पहुंचने का रास्ता बता!
विसर्पी का आदेश पाते ही चोटी के आकार में गुंथे तीनों सर्प खुलने लगे-
और, हवा में घुसकर बवंडर में द्वार बनाते, एक नए बवंडर का निर्माण करने लगे-
वाह! इसके जरिए मैं बवंडर के अंदर घुस सकती हूं!
विसर्पी, मुंड तक पहुंचने में सफल हो गई थी-
शाबाश विसर्पी! मैं किरीगी को और लोडोंगी, सासनी को रोके रखते हैं! तुम जल्दी से मुंड लेकर बाहर आ जाओ!
उसके मुंड ला पाने से पहले ही मैं तुमको अचेत कर दूंगा कालदूत!
हम तीन हैं किरीगी! और तीनों के पास इतनी शक्तियां हैं कि वे अकेले ही तुमको परास्त कर सकें!
ऊर्जा का प्रयोग भी बेकार है कालदूत! मेरा खड्ग ऊर्जा तक को खंड-खंड कर सकता है!

तूने खुद बताया है कि तेरे खड्ग में तेरी मानसिक ऊर्जा भरी रहती है! यानी अगर तेरा मस्तिष्क काम करने लायक न रहे तो ये खड्ग भी काम करने लायक नहीं रहेगा!
कालदूत का वह मानसिक वार-
किरीगी के मस्तक में धंसता चला गया-
ओह! खड्ग में मानसिक ऊर्जा के प्रवाह के कारण मैंने अपने मस्तिष्क को असुरक्षित छोड़ दिया था!
अब मेरा मस्तिष्क अंधेरे में डूब रहा है! मुझे योगरूप का सहारा लेना होगा!
उस योग रूप का जो हर हाल में अपना काम करता रहेगा! चाहे मेरा शरीर चैतन्य हो या अचेत!
आऽऽऽह!
इसका योगरूप तो हमको शिकंजे में कस रहा है! और इस पर हमारे कोई वार असर नहीं कर रहे हैं!
सामरी, सोडांगी से उलझा हुआ होने के बावजूद विसर्पी पर नजर रखे हुए था-
ओह! वह सर्पिणी मुंह उठा चुकी है! उसको बाहर आने से रोकना होगा!

ये बवंडर के अन्दर तो घुस गई है लेकिन मैं इसको बाहर नहीं निकलने दूंगा! अपनी ज्वाला से बंद कर दूंगा इस बवंडर का मुंह जो बाहर निकलने का एकमात्र रास्ता है!
आऽऽऽह! अब मैंने बाहर निकलने का प्रयास किया तो मैं जल जाऊंगी! क्योंकि जलने से मुझे सिर्फ राजदंड बचा सकता है। और इस वक्त उसका प्रयोग मैंने सुरंग बनाए रखने के लिए किया हुआ है! ...
... अब क्या करूं मैं?
और अब सामरी सौडांगी पर सारा ध्यान केन्द्रित कर सकता था–
अब भी हार मान ले नागिन! वर्ना जिन्दगी से हाथ धो बैठेगी!
विसर्पी मंजिल पा लेने के बाद भी मंजिल से दूर थी–
पहले अपनी ज्वाला को मेरे अदृश्य कवच के पार पहुंचाकर तो दिखा!
तूने अपने लिए खुद ही एक कैद की रचना करली है! मेरी ज्वाला तेरे कवच को तब तक ढककर रखेगी, जब तक तू स्वयं कवच से बाहर नहीं आती! और बाहर आते ही मेरी ज्वाला तुझको पलभर में खाक कर डालेगी!
सौडांगी, विसर्पी दोनों ही ज्वाला शक्ति से मात खा गई थीं–

कहीं ये दुश्मन देश के घुसपैठिए तो नहीं हैं! मुझे पता करना ही होगा! चंडिका की ड्रेस में लेकर आई हूं! पर अपने दोस्तों की जान में खतरे में नहीं डाल सकती! इनको यहीं रोकना होगा, और श्वेता को गुम होना होगा... और ये करने का आसान सा तरीका है!

ओ ओ!

श्वेता सचमुच गायब हो चुकी थी-

क्योंकि उसकी जगह चंडिका ने ले ली थी-

श्वेता!

अभी मेरे दोस्तों को श्वेता नहीं मिलेगी! वे श्वेता को ढूंढने के लिए यहीं पर रुके रहेंगे!

और तब तक चंडिका अपना काम करके वापस आ जाएगी!

※ ग्लोबल पोजिशिनिंग सिस्टमः (G.P.S.) एक ऐसा सिस्टम जो सेटेलाइट के माध्यम से किसी भी वस्तु या प्राणी की जमीन या हवा पर स्थिति को बता सकता है।

चंडिका यह नहीं जानती थी कि वह किस मुसीबत में फंसने जा रही थी-
वे तीन आकृतियां सिंहनाद, नागार्जुन और शीतनागकुमार की थीं। और वे उस स्थान तक पहुंच चुके थे जहां पर थल पिशाच का मुंड रखा था-
बस साथियों। यही वह गुफा है जहां पर थल-पिशाच का मुंड रखा है!
फिर देर क्यों कर रहे हो? अंदर चलो और मुंड ले लो!
काम इतना आसान नहीं होगा! मुंड की सुरक्षा का प्रबंध जरूर होगा!
और वह प्रबंध जानलेवा होगा!
फिर भी अंदर एक मुंड ही तो है न! बस!
अभी तो एक ही मुंड है!
लेकिन तुम लोग अगर तुरंत वापस नहीं गए तो अंदर तीन मुंड और रखे जाएंगे। तुम तीनों के मुंड!
ओह! यही है वह सुरक्षा जिनकी तुम बात कर रहे थे शीतनागकुमार!
मैं मुंड का रक्षक नहीं, ध्रुव का मित्र यतिकुमार जिंगालू हूं! और उसके अनुरोध पर मुंड को नकली नागराज के हाथों पड़ने से बचाने आया हूं!
नकली नागराज! क्या बक रहे हो तुम?
अरे, इससे बहस क्या करना? इसको किनारे हटाओ, और मुंड को हासिल करो सिंहनाद...

बिना सोचे समझे सिंहनाग जिंगालू से टकरा गया-

इसको गुफा के मुंह से हटाओ सिंहनाग! नागार्जुन इससे निपटने में तुम्हारी मदद करेगा और तब तक मैं अंदर जाकर मुंड को ले आऊंगा!

मुझे गुफा के मुंह से हटाना तो दूर, यहां से कोई हिला तक नहीं सकता!

उम्मफ! इसको सचमुच हटाने में समय लगेगा शीतनागकुमार!

ऐसा है तो मैं गुफा में...

...एक नया द्वार बना देता हूं!

गुफा में एक छेद हो गया-

और जिंगालू यह लड़ाई हारता जा रहा था-
यह यति अत्यंत शक्तिशाली है! तुम इस पर तीर चलाते रहो नागार्जुन! ताकि इसकी शक्ति क्षीण होती रहे और मैं इसको बेहोश कर सकूं!
बेहोश करने की क्या आवश्यकता है? मेरा यह तीर इसकी गर्दन ही धड़ से जुदा कर देगा!
परंतु तीर निशाने तक नहीं पहुंच सका-
ये कौन... अरे, ये तो चंडिका है!
जिंगालू ध्रुव का दोस्त है! और ध्रुव के दोस्तों के दुश्मन मेरे दुश्मन हैं!
और मेरा रास्ता रोकने वाले मेरे दुश्मन हैं!
अब मुकाबला बराबरी का था-
दो के सामने दो-
नागार्जुन अचूक निशानेबाज है! लेकिन निशाना लगाने के लिए इसको धनुष की आवश्यकता पड़ती है!
और धनुष को डोरी की आवश्यकता पड़ती है!
और डोरी को काटना आसान काम है!
चंडिका से नागद्वीप वासियों की मुलाकात के विषय में जानने के लिए पढ़ें : प्रलय

यहां पर डोरी काटने के लिए बेशुमार तेज धार वाली बर्फ के टुकड़े मौजूद हैं। नागार्जुन के तीर की चोट की कृपा से ये टुकड़े बने हैं।

नागार्जुन के धनुष की डोर कटने के साथ-साथ ही-

खचच

होश की दुनिया से भी उसका संपर्क कट गया-

जिंगालू के सामने भी सिंहनाग ज्यादा देर तक टिक नहीं पाया-

शीतनागकुमार बहुत पहले मुंड हासिल कर चुका था। लेकिन-

ओफ़! ये गुफा तो सुरंगों से भरी हुई है! हर बार एक नई सुरंग मिल जाती है जो घूम-फिर कर मुझको फिर से यहीं पहुंचा देती है, जहां पर मुंड रखा हुआ था!

यानी ये गुफा ही मुंड की सुरक्षा करती है!

या शायद ये मुंड तेरे हाथों पर चढ़कर बाहर जाना नहीं चाहता!

तो... तू सिंहनाग और नागार्जुन को हराकर अंदर तक आ गया है जिंगालू! पर पर ये लड़की कौन है?

... अब तुम दोनों अपने मुंड तक को उठाने के काबिल नहीं रहोगे!

एक बार फिर जंग छिड़ गई थी-

चंडिका! और मुंडों पर चंडिका का ही अधिकार होता है!

ये मुंड तो क्या...

चंडिका यहां पर कहां से आ गई? खैर, यह तो अच्छा ही हुआ! चंडिका के रहते मुंड नागराज के मित्रों के हाथ कभी नहीं लग सकता! ...

... चंडिका के पास कमांडो फोर्स द्वारा दिया गया एक ट्रांसमीटर भी रहता है! उसके द्वारा मैं उससे संपर्क करके उसको एक जरूरी बात समझा देता हूं!

और फिर हम किरीगी और सागरी की मदद के लिए नभक्षेत्र की तरफ रवाना होंगे धनंजय!

पर तुम्हारी हालत अभी ठीक नहीं है ध्रुव!

तुमको आराम की सख्त जरूरत है!

अगर हमको अपनी योजना को कामयाब करना है तो मुझे जाना ही होगा धनंजय!

और कोई रास्ता नहीं है!

हिमालय की गुफा में-

अपने चारों तरफ बिखरे कंकालों को देख शीतनाग! ये भी मुंड हासिल करने आए होंगे! पर बाहर नहीं निकल पाए! मुंड हमारे हवाले कर दो तो हम बाहर निकलने में तुम्हारी मदद करेंगे!

मैं बाहर निकलने का रास्ता अपने आप ढूंढ लूंगा, यति! मुंड तुम्हारे हाथ नहीं लगेगा!

पर तू मुंड को मुझसे बचाएगा कैसे? भूल मत! मैं भी बर्फ के बीच में ही रहता हूं! इसलिए मेरे बालों में शीत शक्तियों को रोकने की अद्भुत क्षमता है! शीत की कोई भी शक्ति मेरे इन विशेष बालों को पार नहीं कर सकती।
जिंगालू, डायलॉग मत मारो! मुंड छीनो और चलो! मेरे दोस्त, मेरी चिन्ता कर...
...अरे! कमांडो ट्रांसमीटर पर सिग्नल! ये किसके हो सकते हैं?
चंडिका के कान में ट्रांसमीटर फिट होते ही-
चंडिका, मैं ध्रुव बोल रहा हूं! कुछ बोलो मत, सिर्फ सुनो! तुमको किसी भी कीमत पर जिंगालू की मदद से मुंड हासिल करना है, और फिर...
ध्रुव, चंडिका को पूरी बात समझाता चला गया-
मैं समझ गई ध्रुव! वैसा ही होगा जैसा तुम चाहते हो!
और वहां से दूर-नभक्षेत्र में-
आऽऽऽह! ये तो मेरी हड्डियां तोड़ रहा है! प्रचण्ड शक्ति है इसके योग रूप में! इसके योगरूप को नष्ट करना होगा! यह प्रचण्ड रूप, कुंडलिनी के जाग्रत होने पर ही पैदा होता है! इसको नष्ट करने का तरीका यही है कि किरीगी की...
...कुंडलिनी को सुला दिया जाए!
कालदूत की पूंछ किरीगी की नाभि में मायाद्वार बनाती चली गई-
कुंडलिनी सोने लगी-
और योग रूप नष्ट होने लगा-

किरीगी रास्ते से हट चुका है! अब मुझको मुंड को हासिल कर चुकी विसर्पी को बवंडर के अंदर से निकालने का प्रयास करना चाहिए!
ऐसा हम आपको करने नहीं देंगे, महात्मा कालदूत!...
...क्योंकि मुंड हमको प्राप्त करना है!
ओह! यानी तुम्हारे मित्र ठीक ही कह रहे थे! तुमने ही हमारे उचित कार्य में व्यवधान डाला है! इसका दंड तुमको मिलना ही चाहिए!
धनंजय के रहते ऐसा नहीं होगा, कालदूत!
तू पाश से हमको बन्दी बनाएगा! हमको!
झेल कालदूत की शक्ति को!
आsssह!
एक ही वार से पता चल गया, ध्रुव कि कालदूत में कितनी शक्ति है! हमारे विज्ञान में इससे निपटने लायक शक्ति नहीं है!
कालदूत में तप की और साधना की शक्तियां हैं! और ऐसी शक्तियों को सिर्फ मस्तिष्क की मानसिक शक्ति द्वारा ही काटा जा सकता है!
पर मानसिक शक्तियां तो यहां पर सिर्फ किरीगी के पास है! और यह बेहोश है! फिर बताओ मैं क्या करूं?

हट जा मेरे रास्ते से, सामरी!
सामरी को भी काल दूत ने घायल कर दिया है ध्रुव! जल्दी कुछ सोचो!
किरीगी मदद करेगा हमारी! वह बेहोश है, मरा नहीं है! यानी उसका अचेतन मस्तिष्क अभी भी काम कर रहा है! तुम्हारी मस्तक मणि उसकी मानसिक ऊर्जा को खींच-कर उसका वार कर सकती है!
और तुम मणि को नियंत्रित कर सकते हो!
अपना शिरस्त्राण उतार कर किरीगी को पहना दो धनंजय!
किरीगी की मानसिक ऊर्जा के प्रवाह को मणि नियंत्रित करने लगी-
और मणि को धनंजय नियंत्रित करने लगा-
कालदूत, विसर्पी को निकालने के लिए आगे नहीं बढ़ पाया
महात्मा कालदूत अब धनंजय और किरीगी से उलझे रहेंगे सामरी! तुम मेरे साथ आओ! हमको मुंड हासिल करना है!
विसर्पी को मुंड तक तो उसके राजदंड ने पहुंचा दिया था! पर हमको तो बवंडर आसपास भी नहीं फटकने देगा!
हम बवंडर के आस-पास फटकेंगे भी नहीं, सामरी!

Amaan
हम मुंड को प्राप्त करने बादलों के नीचे से जाएंगे...
और बादलों के नीचे से ठीक बवंडर के बीचोबीच में निकलेंगे! अभी बिसर्पी के पास राजदंड भी नहीं है! उससे मुंड हासिल करना कठिन काम नहीं होगा!
लेकिन ये बादल तो इतने सख्त हैं कि इन पर खड़ा हुआ जा सके! हम बादलों की मोटी पर्त को चीर कर मुंड तक पहुंचेंगे कैसे?
तुम्हारी ज्वाला शक्ति से! बादल कितना भी ठोस हो, परन्तु पानी का ही बना होता है! ज्वाला इसको पिघला देगी!
और हम इस प्रकार बनी सुरंग से मुंड तक पहुंच जाएंगे!
जल्दी ही-
हम बवंडर के बीच तक आ गए हैं, सामरी!
लेकिन हमारे आते ही बादल फिर से ठोस हो गए हैं! और अब बवंडर की तीव्र वायु के कारण मेरी ज्वाला शक्ति केन्द्रित नहीं हो पा रही है!
ध्रुव! तुम... तुम बवंडर के अंदर तक आ गए!
जरूर मुझे बचाने के लिए आए होंगे!
मैं तुमको नहीं दुनिया को बचाने के लिए आया हूं बिसर्पी! ये मुंड मुझको देदो!
आश्चर्यचकित बिसर्पी, वार को बचा नहीं पाई-

हम बादलों को गलाकर नहीं जा सकते ध्रुव! लेकिन उसकी जरूरत भी नहीं पड़ेगी! विसर्पी द्वारा बनाए गए बवंडर पर से मैं 'ज्वाला रोक' हटा देता हूं! फिर हम इसी से बाहर निकल जाएंगे!

बाहर निकलते ही एक आश्चर्य सामरी और ध्रुव का इंतजार कर रहा था-

कालदूत ने धनंजय और किरीगी को बंदी बना लिया है! पर कैसे?

सौडांगी! तुम...तुम मेरे 'ज्वाला कवच' से आजाद कैसे हो गई?

मामूली सी बात थी! बस मुझको चक्रवात के पास जाना पड़ा! चक्रवात की वायु ने 'ज्वाला लपटों' को इधर-उधर छितरा दिया और मैं आजाद हो गई!

आजाद होते ही मैंने धनंजय पर तांत्रिक वार किया और धनंजय का मणि पर से नियंत्रण हट गया।

फिर महात्मा कालदूत ने इन दोनों को बन्दी बनाने में देर नहीं की!

मेरी मदद से!

परंतु थल क्षेत्र में स्थिति कुछ अलग थी-
इस गुफा में मैं तुमसे ज्यादा देर तक रहा हूं यति! इस गुफा में ऐसे और भी रहस्य हैं जिनके बारे में तू अभी तक नहीं जानता। जैसे कि ये!
आऽऽऽह! दीवारों से कुछ चिपचिपा पदार्थ निकल रहा है! मैं इससे चिपक गया हूं! और- और मैं छूट नहीं पा रहा हूं!
अब मैं तुमको बर्फीली कैद में बंद कर दूंगा! फिर तू मेरा कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा।
अब तू मेरा शिकार बनेगी लड़की! और फिर मैं नागराज की मदद से यहां से बाहर निकल जाऊंगा! नागराज को मैंने मानसिक संदेश भेज दिया है! वह अब आता ही होगा!
ओफ्फ! गड़बड़ पर गड़बड़ होती ही जा रही है! मैं ध्रुव का काम भला कैसे पूरा कर पाऊंगी?
इसी वक्त एक अत्यन्त दुर्गम स्थान पर-
क्या हमको फिर इसी प्रकार यहां पर पहुंचना होगा नागराज?
हम इस स्थान तक आ तो गए हैं अदृश्य मानव, जहां पर मुंडों को संयुक्त करने से पूरा पाप क्षेत्र इसमें खिंच आएगा! परंतु हमको तुरंत जाना भी होगा! शीतनागकुमार को सहायता चाहिए!
नहीं, अदृश्य मानव! एक बार हमारे पैर यहां पर पड़ जाने के बाद यहां का रास्ता खुल गया है! अब यहां पर कोई भी आ सकता है! हमारे दूसरे मित्रों को मुंड लेकर यहीं पर पहुंचना है!

और भूलभुलैया से भरी गुफा के अंदर-
अगर मैं किसी तरह से इसके हाथों से निकलती 'शीत शक्ति' को पलभर के लिए भी रोक सकूं तो मैं इसको बेहोश कर सकती हूं! और यह काम गुफा की चट्टानों से बहता चिपचिपा पदार्थ कर सकता है।
और दोनों हड्डियां शीतनागकुमार के हाथों के सर्पों के खुले मुंह में जा घुसीं-
चाल अच्छी सोची है तूने लड़की! परंतु ये पदार्थ मेरी शीत शक्तियों को नहीं रोक पाएगा!
चंडिका ने जमीन पर बिखरी हड्डियों में से दो हड्डियां उठाकर उनमें चिपचिपे पदार्थ को समेट लिया-
ओह! फिर तो... यस! जिंगालू रोकेगा शीत शक्तियों को!
उस्तरे की धार की तरह तेज हड्डी के किनारे जिंगालू के बालों को काटते चले गए-
क्योंकि उन बालों की कहीं और जरूरत थी-
अरे! अरे! तूने इस चिपचिपे पदार्थ पर यति के बालों को चिपका दिया है! और ये खास बाल किसी भी शीत शक्ति को रोक सकते हैं! मेरी शीत शक्तियां बाहर नहीं निकल पा रही हैं!
अब मुंड मुझको दे दो, और नागराज के यहां पर आने का इंतजार करो शीत नाग!

और फिर-
तुमने पत्थर से बर्फ को तोड़-तोड़ कर मुझे आजाद तो करा दिया चंडिका, लेकिन अब हम बाहर कैसे निकलेंगे?
अब जिंगालू को तो मैं 'ग्लोबल पोजीशिनिंग सिस्टम' के बारे में तो समझा नहीं सकती हूं! वह यंत्र अभी भी मेरी कलाई पर बंधा है!
जादू से जिंगालू! तुम बस देखते जाओ!
इसमें मेरी स्थिति के साथ-साथ मेरे पर्वतारोही दोस्तों की स्थिति भी भरी हुई है! बस मुझे इस यंत्र से उनकी स्थिति पर नजर रखनी है! और उनकी तरफ ही बढ़ना है! फिर तो हम थोड़ी ही देर बाद...
...खुली हवा में सांस ले रहे होंगे!
देखा जिंगालू, हम बाहर आ गए!
मुंड को बाहर तक लाने के लिए धन्यवाद!
अब इसको मेरे हवाले कर दो!
नागराज!
अगर ये मुंड हमको तुम्हारे हवाले ही करना होता तो भला हम शीतनागकुमार को क्यों पीटते?
ये मुंड ध्रुव के पास जाएगा! तुमको ये लेना हो तो उससे ले लेना!

मुझे पता है कि ध्रुव को किस तरह से भ्रमित किया गया है! लेकिन मेरे पास समय कम है! इसलिए मुझे अपने दोस्त के दोस्तों को दुश्मन मानना ही पड़ेगा!...
... अगर मुंड नहीं दोगे तो मुंड मुझको छीनना पड़ेगा!
अपने सर्पों का प्रयोग करके तुमने बातचीत से समस्या सुलझाने का रास्ता खुद ही बंद कर दिया है!
इसलिए अब जिंगालू का जवाब भी उसकी जुबान नहीं हाथ देंगे!
मुंड संभालो, चंडिका और यहां से जाओ!
बालों की उस रस्सी ने नागराज को जकड़ लिया-
लेकिन चंडिका भी मुंड लेकर ज्यादा दूर नहीं भाग पाई-
आऽऽऽह! ये वार किसने किया?
तड़ाक

कोई भी नजर नहीं आ रहा है, और मुंड अपने आप मेरे हाथ से छूटकर हवा में उड़ता हुआ दूर जा रहा है!
और अब... अब मुंड भी गायब हो रहा है!
गायब तो होगा ही लड़की! क्योंकि मुंड को मैंने अपने अदृश्य बाजुओं के अंदर छुपा रखा है!
मुंड अपने आप ऐसा नहीं कर सकता! यह जरूर किसी और का काम है! पर मैं उस अदृश्य चीज को ढूंढू कैसे? अगर वह मुंड ले जाने में कामयाब हो गया तो... यस! मिल गया मुझको वह शख्स!
यह काम अदृश्य मानव का था-
आऽऽऽ ह! तूने मुझको कैसे ढूंढ निकाला लड़की?
'लड़की' नहीं, 'चंडिका' बोल! तू अपनी आकृति को तो छिपा सकता है, पर अपने वजन को नहीं छिपा सकता! जमीन पर देख, बर्फ की सतह पर तेरे पैरों के निशान साफ नजर आ रहे हैं!
दुश्मन को अपने राज नहीं बताने चाहिए! ये राज बताकर तूने मेरा काम आसान कर दिया है! अब मैं बर्फ पर नहीं, वहां चलूंगा जहां पर सिर्फ चट्टानें हैं! हा हा हा!
ओह! जरा सोच-समझ कर बोला कर चंडिका! खुद ही अपने पैर पर कुल्हाड़ी मार ली! अब कैसे मिलेगा यह 'गायब जी'?

जिंगालू और नागराज भी एक दूसरे से भिड़े हुए थे-

ओफ्! इस बंदर ने मुझको खामख्वाह यहां पर रोक लिया! वर्ना अब तक मैं अदृश्य मानव के साथ मुंड लेकर उस दुर्गम स्थान तक पहुंच चुका होता! अब मेरे मित्र भी नभ मुंड और जल मुंड लेकर वहां पहुंचते ही होंगे! पर इस बंदर से पीछा छुड़ाऊं तो कैसे?

जल्दी से लड़ाई खत्म करने का एक तरीका समझ में आ रहा है!

धड़ाक

इसका वजन भी इसकी आकृति के अनुसार ही होगा! मेरे सांप पहाड़ की कोई दरार ढूंढकर उसके नीचे की बर्फ को खोदकर कमजोर कर देंगे!

विषफुंकार को तेज हवाएं बिखेर दे रही हैं! और इसके घने बालों के कारण सांप इसकी त्वचा तक पहुंच ही नहीं पा रहे हैं!

और मेरा वार इसको उस स्थान तक पहुंचा देगा...

जिंगालू के भारी शरीर के गिरते ही कमजोर बर्फ की सतह टूट गई-

जिंगालू की पुकार ने चंडिका का ध्यान खींच लिया-
चंडिका
मैं अदृश्य मानव को तो अभी भी 'ग्लोबल पोजीशिनिंग यंत्र' की मदद से ढूंढ सकती हूं। पर इस वक्त जिंगालू खतरे में लगता है। मुझे उसके पास जाना होगा।
जल्दी ही-
घबराओ मत जिंगालू! मैं तुमको बचा लूंगी!
न तो मैं घबरा रहा हूं और न ही मुझको तुम्हारी मदद की जरूरत है! मैंने तो तुमको नागराज को रोकने के लिए बुलाया था!
ओफ्! ये क्या गड़बड़ हो गई? अब तक तो अदृश्य मानव मुंड लेकर जा चुका होगा! मैं अभी अपने यंत्र पर उसकी स्थिति की जांच करती हूं!
लेकिन मौका हाथ से फिसल चुका था-
यहां पर आसपास न तो नागराज नजर आ रहा है और न ही अदृश्य मानव! वे दोनों यहां से जा चुके हैं जिंगालू! हमको तुरंत ध्रुव से संपर्क करना होगा!
नागराज और अदृश्य मानव, दोनों ही थल मुंड लेकर वापस उसी दुर्गम स्थान पर पहुंच चुके थे-
हम सफल हो गए, अदृश्य मानव! थल पिशाच का मुंड हमारे हाथ लग चुका है!
और बाकी का काम हमने कर दिया है!

आहा ! धन्यवाद दोस्तो ! अब इस दुनिया से पाप को मिटाने का समय आ गया है ! तीनों मुंडों को संयुक्त करने की घड़ी आ चुकी है !

लाओ, मुंड मुझको दे दो !

RCJ

आकाश में पाप क्षेत्र उभरने लगा। उसमें द्वार खुलने लगे, और उनमें से कैद पापी निकलकर त्रिमुंड में समाने लगे-
हा हा हा! हमारी योजना पूरी हुई! अब पाप क्षेत्र के पापी, त्रिमुंड में समा गए हैं! अब मैं पहले पृथ्वी पर के और फिर ब्रह्माण्ड भर के पापी और पाप को इसमें खींचूंगा और फिर वे सारे पापी हमारे गुलाम होंगे!
कोई भी तुम्हारा गुलाम नहीं बनेगा...

...सधम!
ये... ये तो नागराज है! दूसरा नागराज!
ये सधम है! इसने जरूर उस वक्त मेरे रूप की प्रतिलिपि बना ली होगी, जब मैं कुछ पलों के लिए पाप क्षेत्र में था! और मेरे रूप और शक्तियों की नकल को धारण किए होने के कारण ये त्रिसुंड में खिंच नहीं पाया!
इसको अपने कब्जे में ले लीजिए महात्मन्! क्योंकि मेरा ही रूप धारण किए होने के कारण ये त्रिसुंड को मुझसे छीनकर खुद उसका स्वामी बन सकता है!
अगर ऐसा है तो फिर इसको बन्दी बनाना ही पड़ेगा!
नहीं! रुक जाइए महात्मन्! हो सकता है इस नागराज का यह कहना सही हो!... इस बात का फैसला कि सही नागराज कौन है, इन दोनों को ही आपस में कर लेने दीजिए...
... क्योंकि आखिर में जीत सत्य की ही होगी!
ध्रुव! तुम भी यहां पर आ चुके हो! खैर...
...तुम्हारी सलाह तर्क संगत है ध्रुव! सही नागराज कभी मुकाबला नहीं हारेगा!
शुरू करो मुकाबला!

परकाले
दो पहाड़ आपस में टकरा गए थे-
तू कुछ भी कर ले सधम! जीत आखिरकार मेरी ही होगी! सत्य की जीत होगी!
और सत्य मेरे साथ है सधम, तू मेरे रूप की नकल कर सकता है, सर्प शक्तियों की नकल कर सकता है, लेकिन मेरी इच्छा शक्ति की नकल नहीं कर सकता! ... अभी मैं तेरा असली रूप दुनिया के सामने ले आऊंगा!
यह पहचानना असंभव था कि असली नागराज कौन सा है-

दोनों तरफ बराबर की शक्तियां थीं-
फ़ू
फ़ू
फ़ूऊऊ
तूने मेरी विष फुंकार की तो हू-बहू नकल कर ली है!
फुंकार की नकल मैंने नहीं तूने बनाई है!
ये सब बोलकर तू मेरे दोस्तों को भ्रम में नहीं डाल सकता! अब मैं उस शक्ति का प्रयोग करूंगा जो तेरे पास हो ही नहीं सकती है!
देव कालजयी द्वारा दिए गए विशेष नागफनी सर्प, जो ध्वंसक सर्प उगलते हैं!
तू इनकी बात कर रहा है न सधम!
ओह! आश्चर्यजनक हैं तेरी शक्तियां! तूने विशेष नागफनी सर्पों तक की नकल बना ली है!
तब तो तूने इच्छाधारी शक्ति की भी नकल बना ली होगी!
जो तू दिखा रहा है वह नकल है! इच्छाधारी शक्ति जैसी ही कोई और शक्ति है तेरे पास!
असली इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग तो मैं कर रहा हूं!
मैं तो समझ रहा था कि असली नागराज को मैं आंखें मूंदकर भी पहचान सकता हूं! लेकिन ये तो बाली और सुग्रीव के युद्ध जैसा है! असली नागराज पहचान में ही नहीं आ रहा है!
अगर नागराज ने हमको अपने शरीर से निकाल न दिया होता तो असली नागराज को हम पहचान सकते थे!
चिन्ता मत करो सौडांगी! असली नागराज अभी सामने आ जाएगा!

Amaan
इस लड़ाई का ज्यादा लंबा खिंचना खतरनाक हो सकता था-
हमारी सर्प शक्तियां बराबर हैं! इसलिए अब तुझे बेनकाब करने के लिए मैं सत्य का सहारा लूंगा!
वह तो मुझको लेना चाहिए झूठे! पर बता तो जरा कि तेरे जैसा झूठा सत्य का सहारा कैसे लेगा!
सम्मोहन के द्वारा!
सम्मोहन तो मेरे भी पास है सधम!
तू जानता है कि तू झूठ बोल रहा है! तू नागराज नहीं, सधम है! और मैं जानता हूं कि मैं सच बोल रहा हूं! क्योंकि मैं नागराज हूं!
और मेरा सम्मोहन तेरे झूठ को बेनकाब करके तेरा असली रूप दुनिया के सामने ले आएगा सधम!
दोनों की आंखों से सम्मोहन तरंगें निकलकर आपस में टकराने लगीं-
अब यह लड़ाई इच्छाशक्ति की हो गई थी कि किसकी आंखें पहले झपकती हैं और किसका सम्मोहन पहले टूटता है-
और 'झूठ' का सम्मोहन पहले टूट गया-
मेरा... मेरा सधम रूप सामने आ रहा है! पर मैंने नागराज के रूप में नागराज के मित्रों से अपना काम पूरा करवा लिया है!
त्रिमुंड है मेरे पास! अब इसकी पाप शक्ति से मैं तुम सबको नष्ट कर दूंगा!
चिल्लाओ मत सधम!
गला खराब हो जाएगा!
तुम्हारे हाथ में त्रिमुंड की प्रतिलिपि है! वह प्रतिलिपि जो हमने जान-बूझकर तुम्हारे हाथों में सौंपी थी...
...असली त्रिमुंड मेरे हाथ में है!

यही काम करने के लिए मैंने थल क्षेत्र में चंडिका को भी संदेश भेज दिया और उसने वहीं पड़े कंकालों में से एक मिलता जुलता मुंड ढूंढकर नागराज के हवाले कर दिया!

नभ क्षेत्र में मैंने यह काम सामरी की चमत्कारी ज्वाला शक्ति की सहायता से किया! वे तीनों नकली मुंड भी हमने काफी जद्दोजहद के बाद नागराज के मित्रों को सौंपे थे! ताकि उनको हम पर शक न हो! अब त्रिमुंड में जाने की बारी तुम्हारी है, सधस!

नहीं! चाहे मेरी योजना असफल हो गई हो, पर मैं सफल होकर रहूंगा! त्रिमुंड अगर मेरा नहीं हुआ तो किसी का भी नहीं होगा!

ओह! इसको रोको!

वर्ना ये अपनी पाप शक्ति से कुछ भी कर सकता है!

उस द्वार के अंदर...

...इसको मैं भेजूंगा!

वह टक्कर सधम को द्वार के पार सूर्य की सतह की तरफ धकेलती चली गई

और फिर-

हमको नागराज और तुमसे क्षमा मांगनी चाहिए, ध्रुव! नकली नागराज को न पहचान पाने के लिए, और तुम्हारी बात पर विश्वास न करने के लिए!

आपके मुख से सिर्फ आशीर्वाद ही अच्छे लगते हैं महात्मा कालदूत, क्षमा मांगने जैसी बातें नहीं...

और इस सवाल का जवाब वक्त को छोड़कर किसी के भी पास नहीं है-

समाप्त